प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

बाधा जितनी बड़ी होगी, अवसर भी उतना ही बड़ा होगा।
शिव खेड़ा

वर्ष-04, अंक - 42 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 21 जुलाई 2022 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

खुलासा: खालिस्तान संगठन ने दी थी सिद्धू मूसेवाला के हत्यारों को शरण

चंडीगढ़, एजेंसी।

मशहूर पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला के हत्यारों को प्रतिबंधित खालिस्तानी संगठन शरण दे रहा है। इस संगठन का नाम है आतंकी संगठन सिख्स फॉर जस्टिस (एसजेएफ)। इन हत्यारों को हरियाणा के अंबाला में सुरक्षित रखने की कोशिश की जा रही है। इस बात का खुलासा पटियाला में गिरफ्तार दो लोगों की फोन रिकॉर्डिंग से हुई है। इन दोनों के फोन में अमेरिका में बसे एसजेएफ के फाउंडर गुरपतवंत सिंह पन्नू से बातचीत रिकॉर्ड है।

केजरीवाल और मान निशाने पर

एसजेफ फाउंडर और दोनों गिरफ्तार व्यक्तियों के बीच बातचीत की कई रिकॉर्डिंग्स मिली हैं। इसमें यह भी सामने आया है कि एसजेएफ स्वतंत्रता दिवस से पहले हरियाणा, पंजाब और दिल्ली में माहौल खराब करने की भी साजिश रच रहा है। इसके तहत दीवारों पर भारत विरोधी नारे लिखने की योजना बनाई गई है। यह लोग उन कार्यक्रमों को खासतौर पर निशाना बनाने की फिराक में हैं, जिसमें अरविंद केजरीवाल और भगवंत शामिल होने वाले हैं। इसके अलावा अंबाला रेलवे स्टेशन भी टारगेट पर है।

स्टेशनों की रेकी की बात

इस रिकॉर्डिंग में पन्नू दो लोगों से अंबाला कैंट और अंबाला रेलवे स्टेशन की बारीकी से डिटेल के बारे में बात कर रहा है। वह आरोपियों से जगह की रेकी करने की बात भी कह रहा है। उसका खास जोर एंट्री और एग्जिट की जगहों के बारे में जानने में है। इसके अलावा वह इन लोगों को मेन रोड का इस्तेमाल न करने की सलाह भी देता है। पुलिस और इंटेलिजेंस के लोगों के मुताबिक यह रिकॉर्डिंग हरविंदर सिंह उर्फ डॉलरऔर प्रेम उर्फ एकाम के फोन से मिली है। यह दोनों सलेपुरा सेखन शंभू के रहने वाले हैं। दोनों को पटियाला पुलिस ने मंदिर के दीवारों पर आपत्तिजनक नारे लिखते हुए गिरफ्तार किया था।

16 में से 9 नगर निगम में भाजपा की जीत, कांग्रेस ने भी मनाया जश्न

भोपाल।

मध्य प्रदेश में अगले वर्ष विधानसभा का चुनाव होने हैं। उससे पहले राज्य में हुए निकाय चुनाव को सेमीफाइनल माना जा रहा था। नगर निगम चुनाव के नतीजे यह बताते हैं कि राज्य में भाजपा का दबदबा कायम है। हालांकि, इस चुनाव में कांग्रेस को भी जश्न मनाने के मौके मिले हैं। देखा जाए तो कई जगहों पर कांग्रेस ने भाजपा को कड़ी टक्कर दी और कई जगहों पर तो पटखनी भी दी है। इसके अलावा आम आदमी पार्टी ने भी अपनी दस्तक यहां दी है।

पहले चरण में जब वोटों की गिनती हुई थी तब परिणामों में यह सामने आया था कि, भाजपा ने 11 में से 7 नगर निगम में अपने महापौर बनाने में सफलता हासिल की है। पिछली बार सभी 16 नगर निगमों का भाजपा का ही कब्जा था। लेकिन, इस बार उसके हाथ से 7 नगर निगम चले गए। इस बार ग्वालियर, जबलपुर, रीवा, छिंदवाड़ा और मुरैना में कांग्रेस को जीत मिली। जबकि, कटनी में निर्दलीय उम्मीदवार और सिंगरौली में आप की महापौर प्रत्याशी ने जीत हासिल की।

भाजपा के इन शहरों में बने मेयर

पहले चरण की गिनती के बाद यह तस्वीर साफ हुई थी कि, खंडवा से अमृता यादव, बुराहनपुर से माधुरी पटेल, उज्जैन से मुकेश टटवाल, सागर से संगीता तिवारी, सतना से योगेश ताम्रकार चुनाव जीते थे। इसके अलावा भोपाल और इंदौर में भी भाजपा प्रत्याशियों ने जीत हासिल की थी। जबकि कांग्रेस से छिंदवाड़ा में अनंत धुर्वे मेयर का चुनाव जीते हैं। वहीं, सिंगरौली से आम आदमी पार्टी की रानी अग्रवाल मेयर बनी हैं।

कांग्रेस को मिला जश्न मनाने का मौका

दूसरे चरण में भी भाजपा के लिए अच्छी खबर आका दबदबा कायम रहा है। लेकिन इन चुनाव नतीजों ने कांग्रेस पार्टी को भी जश्न मनाने के कई मौके दिए हैं। आपको बता दें कि ऐसा पहली बार हुआ है जब जब कांग्रेस ने राज्य में कुल मिलाकर 5 नगर निगमों में जीत हासिल की है।

मुरैना में भाजपा की महापौर प्रत्याशी मीना-मुकेश जाटव और कांग्रेस प्रत्याशी शारदा सोलंकी के बीच टक्कर थी। यहां सीएम शिवराज सिंह के अलावा केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने भी चुनाव प्रचार की कमान संभाली थी। खुद ज्योतिरादित्य सिंधिया भी यहां चुनाव प्रचार में पहुंचे थे। लेकिन यहां से कांग्रेस को जीत मिली है।

रीवा में मिली जीत के बाद कांग्रेस के पास जश्न मनाने के लिए कई बातें हैं। पिछले 24 वर्षों से यहां कांग्रेस कभी नहीं जीत पाई थी। इस बार बीजेपी की ओर से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान खुद अपने प्रत्याशी के पक्ष में वोट मांगने के लिए पहुंचे थे। लेकिन कांग्रेस प्रत्याशी ने यहां जीत दर्ज की है।

देवास में भाजपा की गीता अग्रवाल और कांग्रेस की विनोदनी व्यास के बीच जोरदार टक्कर मानी जा रही थी। भाजपा प्रत्याशी ने यहां से जीत का परचम लहराया। रतलाम में बीजेपी के प्रहलाद पटेल और कांग्रेस के मयंक जाट के बीच मुकाबला था। प्रहलाद पटेल ने यहां बाजी मारी है।

69 वर्ष बाद म.प्र. में लौटेगा चीता

भोपाल।

भारत ने बुधवार को लगभग सात दशकों के बाद देश में चीतों को फिर से लाने के लिए नामीबिया के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। जानकारी के अनुसार, मध्य प्रदेश के कुनो नेशनल पार्क को 15 अगस्त तक दुनिया के सबसे तेज दौड़ने वाले जानवर की पहली किश्त मिलने की संभावना है। अधिकारियों ने कहा कि भारत को दक्षिण अफ्रीका से 12 चीता मिलने की उम्मीद है, जिसके लिए एक मसौदा समझौते पर पहले ही हस्ताक्षर किए जा चुके हैं, जिसके अंतिम रूप से जल्द ही होने की उम्मीद है।

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) के सचिव एसपी यादव ने कहा कि, वे देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर 15 अगस्त तक चीतों को लाने की कोशिश कर रहे हैं। एनटीसीए के एक अधिकारी ने कहा, हम 15 अगस्त तक (पहला बैच) चीतों को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हमें इससे पहले सभी व्यवस्था करनी होगी और आगमन की सही तारीख तय करने के लिए सभी तौर-तरीकों पर चर्चा करनी होगी।

नामीबिया के साथ समझौते के अनुसार, भारत को चार के दो बैचों में आठ चीते मिलेंगे। अधिकारियों ने कहा कि, पहले बैच के दक्षिण अफ्रीका में एक गैर-सरकारी संगठन से आने की उम्मीद है। पर्यावरण मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, अगस्त तक लगभग आठ चीतों को लाया जा सकता है।

मध्य प्रदेश के मुख्य वन्यजीव वार्डन जेएस चौहान ने कहा, हमने सभी बुनियादी तैयारी पूरी कर ली है और दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया की टीमों द्वारा अनुशंसित काम भी पूरा कर लिया है। अब, हम शिकार के आधार को बाड़ के अंदर स्थानांतरित कर रहे हैं।

1952 में दिखा था आखिरी चीता

भारत में आखिरी बार जीवित चीता 1952 में छत्तीसगढ़ में दिखाई दिया था। 69 साल बाद चीता को भारत में वापस लाने की तैयारी की जा रही है। चीता ट्रांसलोकेशन प्रोजेक्ट के तहत, केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय का उद्देश्य जानवरों को कुनो के जंगल में छोड़ने से पहले एक बाड़े में प्रजनन करना है।

जनवरी 2021 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित अनिवार्य विशेषज्ञ समिति द्वारा अफ्रीकी चीता की शुरूआत के लिए कुनो को आवास के रूप में चुना गया था, जिसका गठन सीटीपी को लागू करने के लिए किया गया था। पैनल ने 2010 और 2012 के बीच 10 साइटों का सर्वेक्षण किया था।

परीक्षा देने गई छात्राओं के उतरवाए कपड़े...?

नई दिल्ली। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने केरल के कोल्लम में कथित घटना की जांच के लिए तीन सदस्यीय फैक्ट-चेक कमेटी का गठन किया है। एक छात्रा ने आरोप लगया था कि, राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा (एनईईटी) की परीक्षा से पहले जांच के दौरान उसे ब्रा हटाने के लिए कहा गया। इस कमेटी को चार सप्ताह में अपनी रिपोर्ट देनी होगी।

एनटीए ने एक बयान में कहा है, शिक्षा मंत्रालय के निर्देशों 17 जुलाई को परीक्षा केंद्र पर फिस्सिंकग के दौरान केरल के कोल्लम जिले के एक केंद्र में एनईईटी (युजी)-2022 के एक कैंडिडेट के उत्पीड़न / अमानवीय व्यवहार के संबंध में जांच की जाएगी और तथ्यों का पता लगाया जाएगा। इसके लिए एक फैक्ट-चेक कमेटी का गठन किया गया है।

कमेटी के सदस्य के तौर पर एनटीए की वरिष्ठ निदेशक डॉ. साधना पाराशर, सरस्वती विद्यालय अराप्पुरा वट्टियूरकावु, केरल की प्राचार्य शैलजा ओआर और प्रगति अकादमी, केरल की सुचित्रा शायजिंथ शामिल हैं। समिति उस जगह का दौरा करेगी और सभी संबंधित व्यक्तियों से बात करने के बाद मामले के तथ्यों का सत्यापन करेगी।

केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री (एमओएस) वी मुरलीधरन ने केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को केरल के कोल्लम में एनईईटी परीक्षा केंद्र में एक घटना का संज्ञान लेने और एनटीए को तथ्यों का पता लगाने का निर्देश देने के लिए धन्यवाद दिया। इस बीच, भाजपा कार्यकर्ताओं ने परीक्षा केंद्र के बाहर विरोध प्रदर्शन किया, जहां कथित तौर पर महिला उम्मीदवारों को परीक्षा हॉल में प्रवेश करने से पहले अपने इनरवियर को हटाने के लिए कहा गया था।

केरल पुलिस ने मंगलवार को एक कथित घटना के संबंध में एक मामला दर्ज किया जिसमें राज्य के कोल्लम जिले में राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा (एनईईटी) में शामिल होने से पहले एक छात्रा को अपने इनरवियर को हटाने के लिए कहा गया था। कोल्लम ग्रामीण पुलिस जिले के चादयामंगलम पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा 354 और 509 के तहत मामला दर्ज किया गया था। इस घटना के सिलसिले में अब तक पांच लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। गिरफ्तार लोगों में एजेंसी के तीन और कॉलेज के दो लोग शामिल हैं।

पार्टी ने अचानक बनाया प्रत्याशी, जनता ने चुन लिया मेयर

देवास।

देवास नगर निगम में एक बार फिर भाजपा ने अपना परचम लहरा दिया है। देवास महापौर की कुर्सी पर भाजपा प्रत्याशी गीता अग्रवाल ने 45 हजार 884 वोटों से कब्जा कर लिया। गीता को 89 हजार 502 मत मिले। वहीं कांग्रेस की विनोदनी व्यास को मात्र 43 हजार 618 वोट मिले हैं। इसी के साथ भाजपा ने निगम की 45 वार्डों में से 32 सीटें जीत ली हैं।

कांग्रेस फिलहाल सिर्फ 8 वार्डों में जीत हासिल कर सकी है। इसके अलावा 5 निर्दलीय उम्मीदवारों की जीत हुई है। इस प्रकार भाजपा प्रत्याशी ने 45 हजार 884 वोटों से जीत दर्ज की। इसके अलावा बसपा की निकिता सूर्यवंशी को 3 हजार 799 मत, आम आदमी पार्टी की चाना ज्ञानेश को 7 हजार 534, जुबेदा हातम को 6 हजार 913 और निर्दलीय उम्मीदवार मनीषा को 12 हजार 367 मत प्राप्त हुए।

अचानक थमाया टिकट

कांग्रेस ने ब्राह्मण समाज की महिला को देवास से महापौर प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतारा था। इसके बाद से ही भाजपा के सामने टिकट को लेकर घमासान चल रहा था। भाजपा की कोर कमेटी ने भोपाल में महापौर प्रत्याशियों की सूची जारी की थी। लेकिन कांग्रेस की सूची जारी होने के बाद भाजपा ने देवास से महापौर प्रत्याशी के लिए कई नाम को लेकर कई बार विचार मंथन किया था।

पहले पूजा रवि जैन का नाम लगभग तय माना जा रहा था लेकिन ऐन वक्त पर पार्टी ने उनकी बजाए विधायक गायत्री राजे पवार के करीबी माने जाने वाले दुर्गेश अग्रवाल की पत्नी गीता अग्रवाल के नाम पर मुहर लगा दी थी। अब जनता ने गीता को मेयर बना दिया है।

राजनीति का ज्यादा अनुभव नहीं

गीता अग्रवाल एक गृहिणी हैं। यूं तो गीता अग्रवाल को राजनीति का कोई व्यवहारिक अनुभव नहीं रहा है। लेकिन पति दुर्गेश अग्रवाल पूर्व में देवास विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष और विधायक गायत्री राजे पवार के विधायक प्रतिनिधि भी रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान खुद विधायक ने उनके लिए वोट मांगे थे। गीता अग्रवाल पति के साथ अग्रवाल समाज के अलावा अन्य समाजों के धार्मिक और सामाजिक कार्यों में अक्सर नजर आती हैं। यहीं कारण है कि महिला वर्ग में उनकी खासी लोकप्रियता है।

370 हटने के बाद से अब तक 118 आम नागरिक ने गवाई जान

नई दिल्ली, एजेंसी।

केंद्र सरकार ने संसद में बताया कि, बीते कुछ वर्षों में जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के मामलों में कमी देखने को मिली है। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने राज्यसभा में बताया कि, आर्टिकल 370 हटाए जाने के बाद से जम्मू कश्मीर में अब तक 118 आम नागरिक मारे गए हैं। इनमें से 5 कश्मीरी पंडित थे। इसके अलावा 16 अन्य हिंदू और सिख समुदाय के लोग थे। राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने यह भी कहा कि जम्मू एवं कश्मीर सरकार के विभिन्न विभागों में 5 हजार 502 कश्मीरी पंडितों को सरकारी नौकरी दी गई है और अगस्त 2019 के बाद घाटी से किसी भी कश्मीरी पंडित का पलायन नहीं हुआ है।

उन्होंने कहा, सरकार की आतंकवाद के प्रति बिलकुल सहन नहीं की नीति है और जम्मू एवं कश्मीर में सुरक्षा की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। आतंकवादी हमलों में काफी कमी आई है, जो वर्ष 2018 में 417 से कम होकर वर्ष 2021 में 229 हो गई है। राय ने कहा कि, 5 अगस्त, 2019 से 9 जुलाई, 2022 तक जम्मू एवं कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा सुरक्षा बलों के 128 जवान और 118 नागरिक मारे गए हैं। उन्होंने कहा, मारे गए 118 नागरिकों में से 5 कश्मीरी पंडित थे और 16 अन्य हिंदू व सिख समुदाय के थे। इस अवधि के दौरान किसी भी तीर्थयात्री की हत्या नहीं हुई है।

यह पूछे जाने पर कि, अगस्त 2019 के बाद देश के अन्य हिस्सों में निवासरत कितने कश्मीरी पंडितों को घाटी में पुनः बसाया गया है?

इसके जवाब में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि, प्रधानमंत्री विकास पैकेज (पीएमडीपी) के तहत घाटी में जम्मू एवं कश्मीर सरकार के विभिन्न विभागों में 5 हजार 502 कश्मीरी पंडितों को सरकारी नौकरी दी गई है। उन्होंने कहा, उक्त अवधि के दौरान किसी भी कश्मीरी पंडित के घाटी से पलायन की सूचना नहीं है। एक अन्य सवाल के जवाब में राय ने कहा कि पिछले कुछ महीनों के दौरान, जम्मू एवं कश्मीर में कश्मीरी पंडितों पर हमले की दो घटनाएं रिपोर्ट की गई है, जिनमें एक व्यक्ति की मौत हो गई है और एक अन्य घायल हो गया है।

कश्मीर घाटी में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किए गए उपायों का उल्लेख करते हुए राय ने कहा कि, मजबूत सुरक्षा और खुफिया ग्रिड, रात-दिन एरिया डोमिनेशन, गश्त और आतंकवादियों के विरूद्ध सक्रिय अभियान चलाया गया है। इसके अलावा नाकों पर चौबीसों घंटे चेकिंग, किसी भी आतंकवादी हमले को विफल करने के लिए रणनीतिक थानों पर सड़क सुरक्षा जांच पार्टियों की तैनाती भी की गई है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2018 से 30 जून 2022 तक जम्मू एवं कश्मीर में 108 आम नागरिकों पर हमले हुए।

करीब साढ़े चार वर्षों से उतरा हुआ है हाथीपावा से तिरंगा

झाबुआ की उस आन, बान, शान को लौटा पाएगा, हर घर तिरंगा अभियान?

हाथीपावा पर खड़ा खम्बा अधिकारियों और सामाजिक संगठनों की देशभक्ति पर लगा रहा प्रश्न चिन्ह?

माही की गूंज, झाबुआ। मुजम्मील मंसूरी

वैसे तो हर भारतीय के मन में राष्ट्रभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई है, लेकिन यह बात और है कि वह आधुनिकता की इस चकाचौध या पारिवारिक जिम्मेंदारियों के तले दबा होने के चलते देश के प्रति अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं कर पाता। ऐसा तो बिल्कुल भी नहीं है कि जनसामान्य के मन में अपने राष्ट्र के प्रति कोई भावना नहीं है। जब भी जनसामान्य को ऐसा मौका मिलता उसकी राष्ट्र के प्रति मन में छीपी भावनाएं उभर कर सामने आती और प्रफुल्लित मन से हर कोई अपनी इन भावनाओं में बहता नजर आता है। साल में कोई दो अवसर तो ऐसे होते ही है जब हर भारतीय राष्ट्र प्रेम की अपनी भावनाओं को उंढेलता ही है। 15 अगस्त और 26 जनवरी दो ऐसे राष्ट्रीय पर्व है जब देश का हर नागरिक राष्ट्र के प्रति अपनी भावनाओं के साथ तिरंगे के आगे नतमस्तक होता ही है। मगर इस वर्ष मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग मंत्रालय भोपाल ने आजादी के अमृत महोत्सव के तहत स्वतंत्रता सप्ताह और हर घर तिरंगा अभियान चलाने की योजना बनाई है। यह सप्ताह 11 से 17 अगस्त तक मनाया जाएगा। जिले में इस अभियान को लेकर कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने बैठक भी की।

मगर अफसोस इस बात का है कि जिला मुख्यालय पर हाथीपावा की पहाड़ियों पर लहराने वाला तिरंगा करीब साढ़े चार वर्षों से उतरा हुआ है। पिछले साढ़े चार वर्षों से झंडे के लिए लगाया गया खम्बा बिना झंडे के ही खड़ा है। हालांकि झंडे के बिना खड़े इस खम्बे पर रात में भी प्रतिदिन रोशनाई रहती है। बड़े-बड़े हेलोजनों से इस खंबे को रोज रोशन किया जाता है। मगर इस खम्बे की आभा बढ़ाने वाला तिरंगा अब इस पर लहराता नजर नहीं आता। हाथीपावा पर लगे इस खम्बे से तिरंगा क्यों और किस प्रोटोकाल के तहत उतारा गया यह तो प्रशासन ही जाने। मगर इन साढ़े चार वर्षों पूर्व इस खम्बे पर एक बड़ा सा तिरंगा हर रोज शहरवासियों के मन में देशभक्ति और तिरंगे के प्रति प्रेम व सम्मान की ज्वाला को हमेशा भड़काता रहता था। नगर के लगभग अधिकतर हिस्से से इस तिरंगे को आसानी से देखा जाता था और शहर का हर जनमानस इसे देखकर गर्व महसूस करता था। फिर अचानक से तिरंगा हाथीपावा की इन पहाड़ियों से गायब हो गया और यहां रह गया सिर्फ खम्बा। तिरंगे के गायब होने के बाद कभी किसी सामाजिक संगठन या प्रशासनिक अमले ने इसे वापस फहराने की जहमत तक नहीं उठाई। ना ही शहरवासियों ने इसको बहाल करने की किसी तरह की कोई मांग उठाई। यही वह कारण है जो अधिकारियों और सामाजिक संगठनों की देशभक्ति पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है? हां यह जरूर है कि जिन आमजन मानस के मन में राष्ट्रभक्ति और तिरंगे प्रति सम्मान अब भी जिंदा है वे इस हालत में नहीं है कि आवाज उठा सके। ऐसा जन मानस सिर्फ मन मसोस कर चुपचाप अपना जीवन यापन कर रहा है।

आज से करीब साढ़े चारवर्ष पूर्व इस शान से हाथीपावा पर लहराया करता था तिरंगा।

वर्तमान में हाथीपावा के उस स्थान पर तिरंगे की गैर मौजूदगी में विरानी छाई रहती है।

इधर मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग मंत्रायल भोपाल के पत्र अनुसार ''हर घर तिरंगा'' अभियान का क्रियावयन किया जाना है। भारत सरकार द्वारा 11 से 17 अगस्त 2022 कि अवधि में ''हर घर तिरंगा'' अभियान के क्रियावयन हेतु निर्देश दिए गए है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य देशवासियों को अपने घर पर राष्ट्रीय ध्वज लगाने के लिए प्रेरित करना, जन सामान्य में देशभक्ति की भावना को जागृत करना तथा राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना है।

इस अभियान को सफल बनाने हेतु कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने मंगलवार प्रातः बैठक आयोजित की। बैठक में मिश्रा ने ''हर घर तिरंगा'' अभियान को सफल बानाने हेतु कार्ययोजना तैयार की। ग्राम स्तर पर संबंधित विभाग द्वारा जागरूक्ता सत्र का आयेजन करते हुए सरपंचों को शत-प्रतिशत घरों, दुकानों, कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों तथा नलकुपों पर झंडा फहराने हेतु प्रेरित किया जाएगा। जिले के समस्त नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में झंडे के वितरण/बिक्री हेतु केन्द्रों को चिन्हीत करके जिले की समस्त सरकारी राशन की दुकानों को भी झंडा वितरण एवं बिक्री केन्द्र के रूप में प्रयोग किया जाएगा। झंडों के निर्माण हेतु स्वयं सहायता समुहों को सम्मिलित करते हुए ''झंडा निर्माण समुहों'' का गठन किया जाएगा। जिले के समस्त सरकारी/सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, शैक्षणिक संस्थानों, व्यवसाय एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों, गैर सरकारी संगठनों, रेस्टोरेन्ट, शौपिंग कॉम्पलेक्स प्लाजा, पुलिस चोकी/थाना इत्यादी को इस कार्यक्रम में अनिवार्य रूप से झंडा फहराये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। सभी प्राथमिक/माध्यमिक स्कूलों में ''पेरेंट टीचर मीटींग'' के माध्यम से कार्यक्रम के संबंध में सभी को जानकारी दी जाएगी। शिक्षण संस्थानों में प्राथना के समय सभी विद्यार्थियों को ''हर घर तिरंगा'' कार्यक्रम के विषय में जागरूक करते हुए शपथ दिलाई जाएगी।जन-जन जागरूकता हेतु समस्त विकास खण्डों में तिरंगा यात्रा, तिरंगा रेली का आयोजन किया जायेगा। ''ध्वज निःशुल्क नहीं रहेगा, राष्ट्रीय भक्ति की भावना का संचार करते हुए अधिक से अधिक संख्या में ध्वज क्रय करने हेतु सभी नागरिकों को प्रेरित किया जाए। इस कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु नोडल अधिकारी का यह दायित्व होगा कि नागरिकों को झण्डा फहराने की विधि तथा अन्य जानकारियों से स्पष्ट रूप से अवगत कराए।

अब जबकि बात तिरंगे को लेकर प्रदेश सरकार और जिला प्रशासन कर रहा है तो यह सवाल तो उठना लाजमी है कि जिला मुख्यालय की हाथीपावा पहाड़ी पर लहराने वाला तिरंगा पिछले कई वर्षों से क्यों उतरा हुआ है। हालांकि दबी जुबान में बताने वाले बताते है कि यहां लहराने वाला झंडा फट चुका था। इसलिए उसे उतारा दिया गया। मगर उसे सुधार कर या नया तिरंगा फिर से लहराने की जहमत जिम्मेदारों ने नहीं उठाई। यह कहानी और है कि यह झंडा यहां किस पागल देशभक्त अधिकारी ने लहराया था। मगर तिरंगे के लहराने के पीछे उसकी ओतप्रोत देशभक्ति, तिरंगे से प्रेम और सम्मान आज भी उस व्यक्ति को सम्मान की नजरों से देखने पर मजबूर कर देता है। ऐसे देशभक्त अधिकारी को हमारा दिल से सलाम, लेकिन उस अधिकारी के जाने के बाद किसी भी माइ के लाल अधिकारी ने अपनी देशभक्ति दिखाने की हिम्मत नहीं जुटाई और हाथीपावा पर फिर से तिरंगा नहीं लहरा सका।

मगर अब आमजन मानस को भी उम्मीद की एक किरन नजर आने लगी है। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हर घर तिरंगा अभियान प्रदेश सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। जिले में कलेक्टर ने इस अभियान की कमान संभाली है। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत स्वतंत्रता सप्ताह 11 से 17 अगस्त तक मनाया जाना है। इसके उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए झाबुआवासियों को यही उम्मीद और अपेक्षा है कि जिले में इस अभियान का शुभारंभ जिला मुख्यालय की हाथीपावा पहाड़ी के उस खाली पड़े खंबे पर तिरंगा लहराने से की जाए। यहां तिरंगा लहराना हजारों घरों में तिरंगा लहराने से बेहतर है। हम यह नहीं कहते कि हर घर तिरंगा अभियान सही नही है। मगर जहां हर शहरवासी का दिल तिरंगे को देखकर बाग-बाग होता हो वहां तिरंगा लहराना ही चाहिए। अगर ऐसा नही होता है तो सवाल जरूर उठेंगा कि झाबुआ की उस आन, बान, शान को लौटा पाएगा, हर घर तिरंगा अभियान?

गांव का उपसरपंच कौन 24 जुलाई को होगा तय, 27 को होंगे जनपद अध्यक्ष के चुनाव

माही की गूंज, पेटलावद।

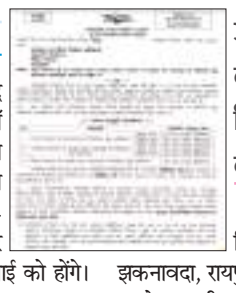

त्रिस्तरीय चुनाव समाप्त होने के बाद प्रक्रिया अब दूसरे दौर में पहुँच गई है। जहाँ सबसे पहले ग्राम पंचायत उपसरपंच के चुनाव किए जाएंगे। निर्वाचन आयोग द्वारा जिला कलेक्टर को जारी निर्देशो के अनुसार 24 जुलाई को प्रथम चरण, 25 जुलाई को दूसरे चरण ओर तीसरे चरण के चुनाव 26 जुलाई को होंगे। सबसे पहले ग्राम पंचायतों के उपसरपंच के चुनाव सम्पन्न होंगे। इसके बाद जनपद पंचायत अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के चुनाव होना है जो कि प्रथम चरण के 27 जुलाई ओर द्वितीय चरण के 28 जुलाई को होना है और 29 जुलाई को जिला पंचायत अध्यक्ष का निर्वाचन होना है।

पेटलावद विकास खण्ड की 77 पंचायतो में 24 को चुने जाएंगे उपसरपंच

निर्वाचन आयोग के आदेश के बाद पहले चरण में पेटलावद विकास खण्ड की 77 पंचायतो के लिए उपसरपंच निर्वाचन की प्रक्रिया 24 जुलाई को की जाएगी। जिसको लेकर स्थानीय प्रशासन द्वारा अधिकारीयो की नियुक्ति की तैयारी की जा रही है। जो निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार उपसरपंच पद के लिए चुनाव सम्पन्न करवाएंगे।

उपसरपंच के लिए भी मारामारी, कई पंचायतो में विवाद की स्थिति, कई पंचायतो में निर्विरोध की संभावना

उपसरपंच पद के लिए न केवल विकास खण्ड की बड़ी पंचायतो जिसमे झकनावदा, रायपुरिया, सारँगी, बामनिया, करवड़, धुंधरी, बरवेट, बनी, बावड़ी, हमीरगढ़, जामली, बेकलदा, मोहनकोट जैसी पंचायतो में उपसरपंच पद को लेकर भारी गहमागहमी है। यहाँ के कई पंच उपसरपंच के दावेदारों के साथ सैर सपाटे पर निकल गए हैं। जो चुनाव के अंतिम समय मे ही पंचायत में पहुँचेगे। वही ग्रामीण इलाकों की कई पंचायतो में उपसरपंच पद की दावेदारी दो से अधिक पंच कर रहे हैं तो कई पंचायतो में उपसरपंच पद को लेकर सामंजस्य बन चुका है और निर्विरोध उपसरपंच चुने जा सकते हैं।

बामनिया, झकनावदा, सारंगी, करवड़, रायपुरिया सहित कुछ पंचायतो में मामला हॉइ प्रोफ़ाइल होने की सम्भवना है। यहां कई नेताओं ने चुनाव को नाक का सवाल बना दिया है और सरपंच चुनाव से भी अधिक राशि खर्च की जा चुकी है और कि जा रही है। उपसरपंच पद के चुनाव को लेकर विवाद की स्थिति कुछ पंचायतो भी बन सकती है।

महाकाल मित्र मंडल के तत्वाधान में 30 लोगों का जत्था हुआ रवाना

माही की गूंज, झकनावदा।

बुधवार को सुबह 10 बजे झकनावदा से महज 5 किलोमीटर दूर मधु कन्या एवं माही नदी के पावन तट पर बसे श्रृंगैश्वर धाम पर बाबा भूतेश्वर के दर्शन करके करीब 30 से 35 कावड़ यात्रियों का जत्था हाथ में कावड़ लेकर जय बम बम एवं भोले शंभू भोलेनाथ के गगन भेदी नारों के साथ सावन माह में उज्जैन के राजा महाकाल के दर्शन हेतु रवाना हुआ। कावड़ यात्रियों का समाजसेवियों द्वारा नवीन सनी मंदिर पर स्वल्पाहार करवाया गया। तत्पश्चात कावड़ यात्रियों ने कंधों पर कांवड़ को लेकर मधु कन्या नदी के पावन तट पर स्थित बाबा भूतेश्वर मंदिर पर दर्शन करके पूजा अर्चना कर उज्जैन के लिए प्रस्थान किया।

हमारे संवाददाता से चर्चा में कावड़ यात्रियों में महाकाल मित्र मंडल के सदस्य जगपाल सिंह राठौर एवं चंद्रशेखर राठौर ने कहा कि, हमारे इस कावड़ यात्रा को 5 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। यात्रा का मुख्य उद्देश्य धर्म का जागरण करना। एवं शिव की महिमा का अलख लोगों में जगाना। साथ में ट्रैक्टर भोजन व्यवस्था को लेकर रखा है। साथ ही उसमें बिस्तर भी रखते हैं रास्ते में कहीं विश्राम करने के लिए। यह उनकी 6 टी कावड़ यात्रा उन्होंने कहा कि कोरोना काल में भी इसे हमने जारी रखा था। इस अवसर पर अभय वोहरा, जमना लाल चौधरी, वीरेंद्र वन गोस्वामी, डॉ रमेश सोलंकी, अजय अगास महाकाल मित्र मंडल अध्यक्ष, कुलदीप आचार्य, भोला लोहार, जितेंद्र बैरागी, विकास राठौड़, बादल प्रजापत एवं बड़ी संख्या में महाकाल मित्र मंडल के सदस्य उपस्थित थे।

चुनाव की बात को लेकर दो पक्षो में हुई मारपीट, शराब पकड़ने की बात को लेकर युवक पीटा

माही की गूंज, रायपुरिया।

ग्राम में बुधवार को चुनाव की बात को लेकर दो पक्षो में मारपीट हो गई। बताया जा रहा है, मामला पंचायत चुनाव के दौरान शराब पकड़ने की बात को लेकर हुआ है और इसी को लेकर नगर के चौराहे पर दिन दहाड़े मारपीट की एवं जान से मारने की धमकी दी।

दोनों ने कहा कि, चुनाव में तूने हमारी दारू पकड़ ली जिसके चलते आज यह गम्भीर विवाद हुआ है। उक्त मामले जब थाना प्रभारी राजकुमार से बात की तो उनका कहना है कि, उक्त मामला आया है जिसमें दो लोगों पर 294, 323, 506, 34 में मामला दर्ज किया गया है। जानकारी अनुसार पंचायत चुनाव में भी इन दोनों ने शराब भी दिन दहाड़े वितरित की थी जिसके चलते रायपुरिया थाने में मामला दर्ज हुआ था। पहले भी इस तरह के मामले सामने आए है।

क्षेत्र की जनता कैसे होगी सुरक्षित यह एक बड़ा सवाल है। अब पुलिस प्रशासन को प्राथमिकता से इन असामाजिक तत्वों पर लगाम कसनी होगी जिससे नगर एवं आसपास की जनता सुरक्षित रह सके और खुली हवा में सांस ले सकें। इस तरह के मामले पहले भी कई बार बीच चौराहे पर मारपीट के साथ देखे गए हैं। जिस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई है और इन गुंडे बदमाशों के साथ बहुत बड़ी लिंक जुड़ी हुई है वह भी पुलिस को ध्यान में रखते हुए जांच करना चाहिये।

न्यायालय परिसर में किया पौधरोपण

माही की गूंज, थांदला।

मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के आदेशानुसार 11 जुलाई से 25 जुलाई तक प्रदेशव्यापी वृहद पौधरोपण अभियान आयोजित किया जा रहा है। इस अभियान के तहत थांदला मे प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश झाबुआ श्रीमान मोहम्मद सैय्यदुल अबरार कि अध्यक्षता एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण झाबुआ के सचिव एवं जिला न्यायाधीश लीलाधर सोलंकी, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट झाबुआ गौतम सिंह मरकाम, न्यायिक मजिस्ट्रेट थांदला सचिन कुमार जाधव, सुश्री प्रमिला राय, अधिवक्तागण एवं न्यायालयील कर्मचारियों की उपस्थिति में न्यायालय परिसर थांदला में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पौधरोपण कार्यक्रम में सभी लोगों ने पौधे लगाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि, पौधारोपण से ऑक्सीजन मिलती है। वहीं पशु-पक्षियों को छांव और मानव जीवन को फल की प्राप्ति होती है। यह वृक्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए एक वरदान जैसे साबित होगा। वृक्ष लगाने से हमारा जीवन खुशहाल होगा। सभी लोग वृक्षारोपण करें।

पौधरोपण कार्यक्रम में श्री सोलंकी ने कहा कि, आज पूरा विश्व प्राकृतिक असंतुलन से गुजर रहा है ऐसे में पौधरोपण का कार्यक्रम मानव अस्तित्व बचाने के लिए बहुत जरूरी है। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए अपने जन्मदिन या किसी विशेष दिन को पेड़ लगा कर मनाएं। पौधरोपण कार्यक्रम में न्यायालय परिसर में 50 अधिक विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे गये। कार्यक्रम में थांदला के सभी अभिवक्ता व न्यायालय के स्टाफ ने सहभागिता की।

ग्राम पंचायत की मिलीभगत से सरकारी भूमि पर चल रहा अवैध निर्माण कार्य

लगातार बढ़ता जा रहा अतिक्रमण, कही बेची तो नही जा रही सरकारी भूमि...?

माही की गूंज, बामनिया। गौरव भंडारी

विकास खण्ड की बड़ी ग्राम पंचायत में अभी-अभी पंचायत चुनाव समाप्त हुए है। पूरे चुनाव में विरोध झेलने के बाद आखिर पूर्व सरपंच रामकन्या मखोड को जीत भी मिल गई। लेकिन जीत के बाद एक बार फिर वही मंजर नजर आने लग गया है। ग्राम के रतलाम रोड पर मुख्य मार्ग से लगी सरकारी भूमि पर विगत 8 से 10 दिनों से धड़ल्ले से अवैध निर्माण कार्य चल रहा है। उक्त निर्माण कार्य की जानकारी ग्राम पंचायत से चाही गई तो पता चला यहां निर्माण के लिए किसी भी व्यक्ति द्वारा कोई अनुमति नही ली गई। मतलब बिना अनुमति के निर्माण कार्य होने के बाद भी उसे नही रोका जा रहा है। कही न कही साफ है कि, ग्राम पंचायत की भी इस निर्माण कार्य मे मौन स्वीकृति शामिल हैं जिसके चलते यहां निर्माण को रोका नही जा रहा है। मुख्य मार्ग रतलाम रोड से लगी भूमि पर लगातार अवैध निर्माण होता जा रहा है और कई बार इसकी शिकायत भी हो चुकि है। मामले ग्राम पंचायत और प्रशासन के संज्ञान में भी आते हैं नोटिस भी बट जाते हैं लेकिन इसके बाद टेबल के नीचे से नोटो के बंडल जमा होने के बाद पंचायत और प्रशासन दोनों मौन होकर देखते रहते हैं।

ग्राम पंचायत के सचिव लक्ष्मीनारायण पाटीदार से इस संबंध में जानकारी ली तो इसकी कोई जानकारी नही होने और मौका देखकर कार्य रुकवाने की बात कही गई।

आड़ करके किया जा रहा निर्माण कार्य

यहां पूर्व में किसी के द्वारा पक्का अतिक्रमण किया गया था, जिसे तोड़ कर मनमाने ठंग से पक्का निर्माण अवैध रूप से किया जा रहा है। निर्माण कार्य बड़ी सफाई से लोहे की चद्दर की आड़ कर किया जा रहा है। निर्माण कार्य के कॉलम बहार आने पर निर्माण कार्य की जानकारी सामने आई है। ग्राम में एक जगह नही कई निर्माण कार्य बिना अनुमति के ही हो रहे हैं। सोसाइटी के पीछे गली में हो रहे निर्माण कार्य को लेकर भी आपत्ति ली गई है। यहां भी गली को कोने पर बन रहे मकान में रजिस्ट्री से अधिक निर्माण कार्य की बात सामने आई है। जिससे गली से निकलने वाले बड़े वाहनों की आवाजाही में परेशानी खड़ी हो सकती है और गली संकरी होने से दुर्घटना का अंदेशा भी बढ़ सकता है। फिलहाल ग्राम पंचायत ने कार्य को रोक कर दस्तावेज मांगे हैं।

ग्राम में बे रोक-टोक के हो रहे निर्माण कार्य से अतिक्रमण बढ़ता जा रहा है जिससे वाहनों का दबाव बढ़ता जा रहा है। ग्राम पंचायत को चाहिए कि, ऐसे निर्माण कार्यो को चिन्हित कर सही निर्माण करवाए ओर सरकारी भूमि पर हो रहे अतिक्रमण को रोक कर ईमानदारी का परिचय दे।

जिले की जनता अब इस बात से हारी... क्योंकि बच्चों की पढ़ाई पर है कमीशन भारी...

जिम्मेदारों को नहीं है कोई सरोकार... अब तो कर दो पालकों पर परोपकार...

माही की गूंज, झाबुआ।

वैसे तो पश्चिमी मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले को पिछड़े जिलों की गिनती में लिया जाता है। जिले की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है। प्रदेश में झाबुआ जिला गरीबी के मामले में दूसरे नंबर पर है तो आलीराजपुर जिला एक कदम आगे होकर गरीबी के मामले में पहले नंबर पर है। झाबुआ जिले की बात करें तो यहां साक्षरता दर अब भी वैसे नहीं है जैसी करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद होनी चाहिए थी। झाबुआ जिला यूं तो आदिवासी बाहुल क्षेत्र है। जनजातीय वर्ग के लोगों की खासी आबादी यहां है। इसी को मद्देनजर रखते हुए सरकार यहां पानी की तरह पैसा बहाती है, लेकिन बावजूद इसके जिले की साक्षरता दर में कोई खास फर्क अब तक देखने को नहीं मिला है। अब भी यहां पर अधिकतर लोग अशिक्षित होकर हस्ताक्षर करने के लिए अपने अंगूठे का इस्तेमाल करते नजर आते है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि यहां का तंत्र कागजी घोड़े दौड़ाने में माहिर है। जिले में शिक्षा के स्तर का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बीते शैक्षणिक सत्र में जिले का परीक्षा परिणाम बेहद ही खराब रहा है या यूं कहें कि ऊंट के मुंह में जीरा साबित हुआ है।

जिले में शिक्षा के इतने गिरे हुए स्तर के बावजूद जिले में प्रायवेट स्कूलों के नाम पर शिक्षा की दुकानें बहुत बड़ी संख्या में संचालित हो रही है और इन दुकानों पर सबसे ज्यादा ठगा जा रहा है मध्यमवर्गीय परिवार। पालकगण अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के लालच में इन शिक्षा माफियाओं की स्कूलों में अपने बच्चों को दाखिला तो दिलवा देते, लेकिन इन पालकों के साथ स्थिति ऐसी हो जाती कि वे अपने बच्चों के भविष्य को बनाने के लिए कर्ज तले दब जाते। स्कूलों की भारी -भरकम फीस और शिक्षा माफियाओं की डीमांड पूरी करते-करते पालकों के सिर का पासीना ऐड़ीयों तक पहुंच जाता। कभी स्कूल फीस के नाम पर तो कभी डोनेशन के नाम पर, तो कभी किसी आयोजन को लेकर, तो कभी किसी प्रतियोगिता के नाम पर मध्यमवर्गीय पालकों की जेब पर खुलेआम डाका डाला जा रहा है। इन प्रायवेट स्कूलों के नाम पर चल रही शिक्षा की दुकानों के आमल तो यह है कि गरीबों को दान करना हो, गौ-माता का पेट भरना हो, गरीब बच्चों में खिलौने बांटना हो, कपड़े बांटना हो, या किसी तरह का कोई आयोजन संस्था द्वारा किया जाना हो, सभी में किसी न किसी तरह से पालकों की जेब काटी ही जाती रहती है। स्कूल में किसी भी तरह की योजना बनाकर बच्चों को बोल दिया जाता है कि फलां- फलां आयोजन स्कूल में होना है इसके लिए सभी बच्चे एक निश्चित राशि लेकर स्कूल आएं। किसी भी पालक की आर्थिक स्थिति जाने बगैर ही उनके मोबाईल पर बच्चों के स्कूल से मैसेज पहुंच जाते कि फलां तारीख को स्कूल में फलां तरीके का आयोजन होना है कृपया बच्चों को निश्चित शुल्क देकर ही पहुंचाए। मरता क्या ना करता की स्थिति में पालक बच्चों के भविष्य को देखते हुए अपनी जेबें स्कूल संचालकों के सामने ढीली कर देता।

पालकों का खुला शोषण

यह एक खुला शोषण है, जिसमें अपने बच्चों का भविष्य देखते हुए मध्यमवर्गीय व्यक्ति हमेशा फंसा ही रहता है। यह स्थिति जिले में चल रहे लगभग तमाम प्रायवेट स्कूलों की है। हर प्रायवेट स्कूल की अपनी अलग ही ड्रेस कोड है, यह ड्रेस कोड फिक्स नहीं है। पता नहीं कब स्कूल प्रशासन को खुजली चल जाए और देखते ही देखते वह ड्रेस चेंज कर दे। ऐसा होने के बाद पालक को जो पीढ़ा होती है उसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। इस साल जो ड्रेस बच्चे को दिलवाई है क्या पता वह अगले साल रहे ना रहे। पता नहीं कितने की नई ड्रेस आएगी। यह एक मध्यमवर्गीय पालक के लिए हमेशा चिंता का विषय हमेशा बना रहता है। आज से करीब दो-ढाई दशक पहले की स्थिति कुछ ऐसी हुआ करती थी कि बच्चों को जब पालक स्कूल ड्रेस दिलाते थे तो यह अंदाजा लगाया जाता था कि बच्चे को इतनी बड़ी साइज की ड्रेस दिलाई जाए ताकि वह इसमें अगले दो या तीन साल निकाल ले। लेकिन अब ऐसा हो पाना नामुमकिन है। क्योंकि प्रयवेट स्कूलों की मनमानी पता नहीं कब क्या लागू कर दे।

कमीशन का पूरा खेल

शिक्षा की इन दुकानों से जो कमीशन का खेल शुरू होता है वह बाजार में भी पहुंचता है। हर स्कूल की एक निश्चित दुकान होती है जहां उस स्कूल की सामग्री, ड्रेस या पुस्तकें उपलब्ध होती है। इन दुकानों के अलावा आप पूरा बाजार घूमलें तब भी आपको उस स्कूल की पुस्तकें, सामग्री या ड्रेस नहीं मिल पाएगी। उस पर सितम यह कि वह दुकानदार जिस कीमत पर आपको देगा उसी कीमत पर आपको वह सामग्री लेना पड़ेगी। इन दुकानों पर डिस्काउंट या कंसेक्शन की तो बात ही करना गुनाह है, अगर आपने डिस्काउंट को लेकर बहस कर ली तो दुकानदार इस तरह से देखता मानों पालकों ने उनका खून चूस लिया हो, जबकि इसके उलट खून पालकों का ही चूसा जाता है। इन दुकानों से हजारों रुपयों की खरीदी करने के बाद भी पालकों को पक्का बिल नसीब नहीं होता। कच्चे कागज पर दुकानदारन पैन से बिल बनाकर दे देता। पालक ने अगर जोर लगाकर बिल मांग भी लिया तो उसे बाद में बिल देने का झूनझुना पकड़ा दिया जाता। मगर पक्का बिल दिया ही नहीं जाता। इस खेल में स्कूल संचालकों का भी बहुत बड़ा कमीशन होता है। इसीलिएए जिले की जनता अब इस बात से हारी... क्योंकि बच्चों की पढ़ाई पर है कमीशन भारी....।

पालकों का खून चूसते, तो बच्चों को प्रताड़ित करते

प्रयवेट स्कूलों में पालकों के खून चूसने का यह खेल इस कदर चल रहा है कि आए दिन पैसा कमाने के चक्कर में शिक्षा माफिया अपने स्कूलों में कुछ न कुछ बदलाव करते रहते और इस बदलाव का सीधा-सीधा दंश बच्चों के पालकों को झेलना पड़ता। स्थिति इतनी भयावह कि स्कूल ड्रेस के नाम पर बच्चों की दो-दो तरह की ड्रेसे मंगवाई जाती, नहीं लाने पर बच्चों को सजा दी जाती। स्कूल ड्रेस है और जूते नहीं है तो बच्चों को स्कूल के बाहर खड़ा कर दिया जाता और दबाव यह बनाया जाता कि जूते भी आपको वही पहनने होंगे जो स्कूल ड्रेस के साथ आते है। दूसरे जूते पहनकर जाने पर स्कूल में प्रवेश नहीं दिया जाता। अगर ड्रेस और जूते सही है और मौजे अलग है तब भी बच्चों को मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता।

दो गुनी रकम अदा करने को मजबूर पालक

प्रायवेट स्कूलों के मायाजाल में फंसा पालक अपने बच्चों का भविष्य संवारने की मजबूरी में अपने चादर से ज्यादा पैर फैलाता। मगर शिक्षा माफियाओं की स्थिति ऐसी कि उसकी पूरी चादर पर ही कब्जा कर लेते। प्रायवेट स्कूलों और कमीशन खौर दुकानदारों का तालमेल ऐसा कि किसी भी चीज की दोगुनी रकम वसूली जाती और मध्यमवर्गीय पालक अपना पेट काटकर इस दोगुनी रकम को अदा करते। प्रायवेट स्कूलों के नाम शिक्षा बैचने वाले माफियाओं और शिक्षा के नाम धंधा करने वाले दुकानदारों की स्थिति हम उपर साफ कर चुके है। स्कूल द्वारा फिक्स की गई दुकानों से ड्रेस लेना हो, पुस्तक लेना हो या कापियां सभी के लिए भारी - भरकम बिल चुकाना पड़ता है। हालात ऐसे है कि मां शारदा के नाम पर चल रही शिक्षा की दुकान में बच्चों को स्कूल से जुड़ी ड्रेस या कोई भी सामग्री खरीदने के लिए एक फिक्स दुकान पर जाना होता है। यहां बच्चे का ट्रेक सूट मय टी-शर्ट व मौजों के 1300 रुपये के लगभग मिलता है। इसी स्कूल ने इस वर्ष ड्रेस में बदलाव करते हुए हाफ बाह के शर्ट को हटाकर पूरी बाह का शर्ट लागू कर दिया। अब पालकों की स्थिति ऐसी कि जिसने पिछले वर्ष बच्चे को नई ड्रेस दिलवाई है वह बैकार हो गई। अब बच्चे को नया शर्ट दिलवाना होगा, वह भी पूरी बाह का। इस स्कूल द्वारा फिक्स की गई दुकान पर एक जोड़ मौजे की कीमत लगभग 60 रुपये है। इसी तरह इसी दुकान से मिलने वाली सभी चीजों पर भाव भी फिक्स है। दुकानदार द्वारा फिक्स किए गए मुल्यों में किसी तरह की कोई रियायत भी नहीं है। मगर इसके उलट अगर बाजार का मुल्य आप पता करेंगे तो वह ट्रेकसूट जो फिक्स दुकान पर 1300 के लगभग में मिल रहा है वह बाजार में मात्र 600 से 700 रुपये में मिल जाएगा। इसी तरह अगर बाजार में मौजों की एक जोड़ की कीमत देखी जाए तो बमुश्किल 30 से 40 रुपये में आसानी से मिल सकती है। मगर हाय री मजबूरी पालक ऐसा नही कर सकते। क्योंकि स्कूल संचालक और दुकानदारों ने जाल ही ऐसा बुन रखा है।

जिम्मेदारों को नही है कोई सरोकार

जिले में बिगड़ती हुई शिक्षा व्यवस्था को देखते हुए तो यही लगता है कि जिले के जिम्मेदारों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि इन हालातों में जिले का आने वाला भविष्य कैसा होगा? शिक्षा के इस बिगड़े हुए ढर्रे का यहां के गरीब आदिवासी समाज पर क्या असर पड़ेगा? यहां पर निवास करने वाला मध्यमवर्गीय तबका किस तरह की परेशानियों का सामना करेगा? चाहे जिम्मेदारों को कोई फर्क पड़े ना पड़े लेकिन जिले की जनता को इसके गंभीर परिणाम जरूर भुगतने पड़ेंगे। पिछले दिनों इन्ही सब कारणों की वजह से व्यथित होकर जिले के जय आदिवासी युवा शक्ति संगठन के कार्यकर्ताओं ने प्रशासन को ज्ञापन सौंपते हुए चिंता जाहिर की थी। ज्ञापन देने वालों ने ज्ञापन दिया और लेने वालों ने भी ले लिया। मगर जिम्मेदारों की कारस्तानी ऐसी कि जिला मुख्यालय को छोड़ ग्रामीण इलाकों में अधिकारी कार्रवाई करने हेतु पहुंच गए। जयस संगठन ने ज्ञापन में जिस दुकान व संस्था का जिक्र किया था वह अब भी पूर्व की तरह ही पालकों का शोषण करने में लगी हुई है। जिम्मदारों का इस तरह का रवैया यह साफ दर्शाता है कि शिक्षा के नाम पर चल रहे इस कमीशन के धंधे की बंदर बांट में अधिकारियों को भी टूकड़े डाले जाते होंगे। अगर ऐसा है तो उन भ्रष्टों को भी यह सोच लेना चाहिए कि भगवान के घर देर है अंधेर नही। कभी न कभी कहीं न कहीं अगर यह स्थिति उनके साथ भी बनी तो फिर क्या होगा?

इसलिए जिले के आला अधिकारियों से यही विनय है कि अपनी कुंभकर्णी नींद से जागे और शिक्षा के नाम पर चल रही इस खुली लूट पर नकेल कसें। प्रायवेट स्कूलों के साथ-साथ ऐसी दुकानों पर भी कार्रवाई करें ताकि गरीब व मध्यमवर्गीय पालकों को थोड़ी राहत मिले। जिला शिक्षा अधिकारी व कलेक्टर इस तरह के मामले को गंभीरता से संज्ञान में लेकर पालकों पर परोपकार करें।

निर्वाचित महिला सरपंच ओर पंचो ने पूर्व सरपंच पर जान से मारने की धमकी और मारपीट का लगाया आरोप

माही की गूंज, पेटलावद।

त्रिस्तरीय ग्राम पंचायत चुनाव के परिणाम कई प्रत्याशियों के गले नही उतर रहै जिसके चलते पूर्व सरपंच विवाद झगड़ो पर उतारू हो रहे हैं। विकास खण्ड पेटलावद की रुणजी ग्राम पंचायत में सरपंच संघ के अध्यक्ष और भाजपा नेता मुन्नालाल निनामा द्वारा हार की बौखलाहट में जीते हुए सरपंच ओर पंचो पर हमला कर नुकसान पहुचाने का मामला सामने आया है। सोमवार को ग्राम पंचायत रुणजी की निर्वाचित सरपंच ओर पंचो ने पूर्व सरपंच सहित 13 अन्य लोगों के खिलाफ पुलिस थाने में जान से मारने की धमकी एवं मारपीट की रिपोर्ट दर्ज करवाई।

जानकारी के अनुसार रुणजी की निर्वाचित सरपंच कालीबाई पति गुड्डू मेड़ा और पंचगणों ने पुलिस थाने में आवेदन देकर बताया कि, ग्राम पंचायत रुणजी के पूर्व सरपंच मुन्नालाल निनामा जो कि चुनाव हारने और रंजिश के चलते पूर्व सरपंच ने अपने साथियों के साथ मिलकर हमला कर दिया और जान से मारने की धमकी दी गई। आवेदन में बताया कि, सरपंच पति और 6 पंच मिलकर ग्राम पंचायत रुणजी के सूठवाडिया में पटेल दूलेसिंह के घर मिलने गए थे, वापस लौटते समय रविवार को पूर्व सरपंच मुन्नालाल और अन्य सहयोगी रास्ते में घात लगाकर बैठे थे और हत्यारों से लेस होकर धारीया, तलवार व पत्थर गोगण आदि लेकर अचानक हमला कर दिया, जिससे सब बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचा कर भागे। साथ ही उक्त लोग निर्वाचित सरपंच को धमकी दे रहे हैं कि तुम जीत गए हो पर गांव में काम नहीं करने देंगे ओर शांति से नहीं रहने देंगे। निर्वाचित महिला सरपंच ने अपनी जान को खतरा बताते हुए विपक्षीगण पर सख्त कार्रवाई की मांग की है। आवेदन देते समय बड़ी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद थे।

बताया जा रहा है कि, ग्रामीणों द्वारा एकजुट होकर की गई शिकायत के बाद पूर्व सरपंच द्वारा भी जीते हुए सरपंच ओर उसके साथियों पर अर्नगल आरोप लगाने की शिकायत दर्ज करवाई है।

स्कूल की छत गिरी बड़ा हादसा टला

माही की गूंज, अलीराजपुर। प्राथमिक विद्यालय चौकीदार फलिया अंबारी में स्कूल की जर्जर भवन की छत ढह गई। गनीमत यह रही कि उस समय छत के नीचे कोई मौजूद नहीं था। बच्चे हादसे का शिकार होने से बच गए। गनीमत रही की ये हादसा स्कूल समय में नहीं हुआ वरना स्कूल में बड़ा हादसा भी हो सकता था। वहीं इस पर स्कूल प्रबंधन ने कई बार जर्जर छत के बारे में शिक्षा विभाग के उच्चाअधिकारियो सूचित भी किया था, लेकिन शिक्षा विभाग ने कोई सुध नहीं ली थी। आपको बता दें, घटना लगभग सुबह 6 बजे की है। जिस समय यह घटना हुई, वह कक्षाएं लगाने का समय नही था। अगर स्कूल के समय छत गिरती तो गंभीर हादसा हो सकता था।

जिले के अधिकांश भवन जर्जर है जिस पर जिम्मेदार नही कोई एक्शन ले रहे हैं न ही समस्या का निराकरण कर रहे हैं। बावजुद इन भवनों पर ध्यान न देना खतरे को न्योता देने के समान है। शिक्षा विभाग के अधिकारी बच्चो की जान को खतरे में डालकर से खुद ऐसी वाले कमरे में बैठे हैं।

वृहद पौधरोपण अभियान का शुभारंभ

सिविल अस्पताल पेटलावद में किया 100 से अधिक प्रजाति के पौधरोपण

माही की गूंज, पेटलावद।

म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देश पर पेटलावद मे जिला एवं अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश व अध्यक्ष तहसील विधिक सहायता मनोहरलाल पाटीदार, खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. एमएल चोपड़ा ने सिविल हॉस्पिटल पेटलावद में वृहद पौधरोपण अभियान का शूभारंभ किया। यह अभियान 11 जुलाई से 25 जुलाई तक विभिन्न स्थानो पर चलाया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण हेतु स्थानीय प्रजाति के वृक्षों का ऐसे स्थानों पर रोपण करना है जहां इन वृक्षों की उत्तरजीवितता सूनिश्चित की जा सके। इस हेतु एडीजे पेटलावद द्वारा विधिक सेवा समिति के सदस्यों की बैठक आहुत कर सभी को पौधरोपण का विभागवार लक्ष्य सौंपा गया।

100 से अधिक पौधे रोपे

इस अवसर पर सिविल अस्पताल पेटलावद में न्यायाधीश श्रीमती रुचि पटोरिया, डॉ. गोपालसिंह चौयल, डॉ. एमएल चोपड़ा, डॉ. अखिलेश सरोडा, अस्पताल के कर्मचारी एवं नर्सिंग कॉलेज आयुष्मान से आए छात्र ने मिलकर न्यायाधीश, चिकित्सक व कर्मचारी के साथ मिलकर 100 से अधिक बिभिन्न प्रजाति के पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर अलग-अलग विभागों के अधिकारी एंव कर्मचारी उपस्थित रहे। जिनमे मूख्य रूप से न्यायाधीश कनिष्ठ खंड श्रीमती रुचि पटेरिया अरोरा, चिराग अरोरा, सीईओ जनपद पेटलावद अमित व्यास, रेंजर पेटलावद ओमप्रकाश बिरला आदि ने पौधरोपण किया। अगले लगभग 15 दिवस तक इस पौधरोपण कार्यक्रम का क्रियान्वयन विधिक सहायता समिति के द्वारा जन सहयोग से किया जाएगा।

रामपुरिया पंचायत का मामला कलेक्टर के पास पहुँचा, पीठासीन के आंकड़ों में जीती सरपंच के पक्ष में हुआ फैसला

पीठासीन की गलती से बदले थे परिणाम, जीत के परिणाम बदलने से बार-बार मन रहा जश्न

माही की गूंज, पेटलावद।

विकास खण्ड की ग्राम पंचायत रामपुरिया में निर्वाचन कार्य मे हुई लापरवाही का खामियाजा ग्राम पंचायत के प्रत्याशियों और उनके समर्थकों को भुगतना पड़ रहा है। 14 जुलाई को घोषित परिणाम में रेखा डोडियार को विजय घोषित किया गया था जबकि 25 जून को पीठासीन द्वारा प्रत्याशियों को दिए गए आकड़ो में रंगा अनिल निनामा जीत रही थी। परिणाम बदलने के बाद से दोनों सरपंच प्रत्याशियों के समर्थकों द्वारा एसडीएम कार्यालय ओर कलेक्टर कार्यालय में पहुँच कर परिणाम नही बदलने ओर परिणाम की पुनः जांच करने की मांग की जा रही थी। मामले की जिला कलेक्टर को अपील की गई जिसके बाद सभी तथ्यों की जांच की ओर जवाबदार अधिकारीयो के बयान लिए गए। जिसके बाद मामले का निराकरण हो सका और पीठासीन द्वारा चुनाव के बाद दिए गए आंकड़े सही होना पाए गए। जिसके बाद रंगा निनामा को ही सरपंच विजय घोषित किया गया और इस संबंध में आदेश जारी किया गया।

पीठासीन ने मानी गलती, सभी पक्षो को सुनने के बाद हुआ निराकरण

ग्राम पंचायत में इस प्रकार के विवादों को बढ़ते देर नही लगती। प्रशासन ने मामले में तुरंत सुनावई करते हुए रविवार अवकाश के दिन ही सभी पक्षो को नोटिस जारी कर मंगलवार को बुलाया था और सभी पक्षो के बयान दर्ज करने के बाद पीठासीन अधिकारी की पूरी गलती सामने आई है। जिसने पत्रक में सरपंच प्रत्याशी के क्रमांक ऊपर-नीचे कर जमा कर दिया जिससे परिणाम में बदल गए।

मामले में रामपुरिया के बूथ के पीठासीन अधिकारी की भारी लापरवाही सामने आई हैं। जिसकी गलती के कारण ग्रामीणों में बड़े विवाद की स्थिति निर्मित हो गई थी। तहसीलदार जगदीश वर्मा ने बताया कि, कलेक्टर साहब ने सभी पक्षों को सुनने के बाद रंगा निनामा को प्रमाण पत्र जारी करने का आदेश किया है और पूर्व में जारी आदेश स्वतः ही निरस्त माना जाएगा।

हार-जीत के साथ निकलते रहे जुलूस

25 जून को हुए मतदान के बाद से ग्राम पंचायत रामपुरिया में जीत के जुलूस बार-बार बदल रहे थे। जहा 25 जून को मतदान के बाद रंगा निनामा के सर्मथकों ने विजय जुलूस निकाला, तो 14 जुलाई को घोषित परिणाम के बाद रेखा डोडियार के समर्थकों द्वारा जुलूस निकाला गया। लेकिन ये खुशियां ज्यादा देर नही टिकी और 19 जुलाई को कलेक्टर के निराकरण के बाद फिर से रंगा निनामा ने विजय जुलूस निकाला। अब देखना है कि, मामला जिला स्तर पर सिमटता है या हाईकोर्ट पहुँचता है। क्योंकि रेखा डोडियार द्वारा हाईकोर्ट में याचिका लगाने के लिए पहुँच गई थी लेकिन इसके पूर्व ही कलेक्टर द्वारा मामले का निराकरण कर दिया गया।

कई पंचायतो में मतदान दल द्वारा की गई लापरवाही

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के प्रथम चरण में हुए मतदान में भारी लापरवाही सामने आई है। जिसके कारण कई पंचायतो में विवाद की स्थिति बनी है। ज्ञात हो कि, मतदान से पूर्व स्थानीय प्रशासन की अव्यवस्था और मत पत्र समय पर उपलब्ध नही होने के चलते मतदान दल समय से नही पहुँच पाया और कई प्रकार की खानापूर्ति समय से नही हुई जिस कारण कई बूथों पर विवाद की स्थिति भी बनी। पूरे विकास खण्ड की बात करे तो लगभग 10 ग्राम पंचायतों में पंच-सरपंच प्रत्याशियों ने चुनाव परिणाम को लेकर आपत्तियां दर्ज करवाई थी।

संपादकीय

संगठनों की सक्रियता, कोर्ट की सख्ती और एनजीटी के आदेशों को बावजूद नहीं जागी सरकारें

खनन माफिया से लोहा लेते हुए हरियाणा के एक जांबाज पुलिस अधिकारी की दर्दनाक मौत इन संगठित अपराधियों के दुस्साहस की बानगी ही दिखाती है। मंगलवार को अरावली की पहाड़ियों के करीब मेवात में तावडू इलाके में खनन की औचक जांच को पहुंचे डीएसपी सुरेंद्र सिंह बिश्नोई को डंपर से कुचलकर मार डाला गया। पचगांव में हुई घटना के बाद पुलिस प्रशासन हिल गया और भारी सुरक्षा बल को अपराधियों पर शिकंजा कसने को भेजा गया। मुठभेड़ की खबरें भी आई हैं। यहां सवाल यह भी है कि स्वयंसेवी संगठनों की सक्रियता, कोर्ट की सख्ती और एनजीटी के तमाम आदेशों के बावजूद सरकारें वक्त रहते सजग क्यों नहीं होती। क्यों हम बिना हादसों के सजग-सतर्क नहीं होते। क्यों इन अपराधियों को संरक्षण देने वाले राजनेताओं के खिलाफ कार्रवाई समय रहते नहीं होती। इसी बीच पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री के भानजे के खिलाफ अवैध खनन में संलिप्तता पर प्राथमिकी दर्ज होना खनन माफिया व राजनेताओं के अपवित्र गठबंधन को ही उजागर करता है। यहां सवाल यह भी है कि अवैध खनन पर कार्रवाई को गए डीएसपी को पर्याप्त सुरक्षाबल क्यों नहीं उपलब्ध कराया गया। यह जानते हुए कि विगत में कई राज्यों में ऐसी दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। वर्ष 2015 में मध्य प्रदेश के नूराबाद इलाके में एक पुलिसकर्मी की हत्या डंपर से कुचलकर कर दी गई थी। वहीं मध्य प्रदेश के मुरैना में एक आईपीएस अधिकारी की खनन माफिया ने ट्रैक्टर ट्राली से कुचलकर हत्या कर दी थी। जब अरावली से सटे जिलों में लगातार अवैध खनन जारी है तो पर्याप्त सुरक्षा बलों के साथ ही छापे की कार्रवाई की जानी चाहिए। इसके लिये आधुनिक तकनीक का सहारा लिया जा सकता है। मसलन ड्रोन के जरिये निगरानी की जा सकती है तथा बड़े वाहनों पर इंटरनेट से जुड़े कैमरे लगाकर कंट्रोल रूम से निगाह रखी जा सकती है। लेकिन सत्ताधीश हादसों के बाद जागकर कहते हैं कि दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

बहरहाल, तंत्र की चूक के चलते हमने कुछ माह बाद सेवानिवृत्त होने वाले एक जिम्मेदार व साहसी पुलिस अधिकारी को खो दिया। सरकार ने उसे शहीद का दर्जा देने, एक करोड़ की राहत राशि व एक परिजन को सरकारी नौकरी देने की बात कही है। लेकिन सवाल तमाम बाकी हैं कि तावडू क्षेत्र में अरावली की पहाड़ियों पर बड़े पैमाने पर जारी अवैध खनन को रोकने के लिए जो स्पेशल टास्क फोर्स गठित की गई है, वह मौके पर डीएसपी के साथ क्यों नहीं थी। दरअसल, इस तरह के संगठित अपराधों का मुकाबला प्रशासन के विभिन्न विभागों के समन्वित प्रयासों से ही संभव हो सकता है क्योंकि यह कानून व्यवस्था से जुड़ा मामला भी है। वह भी तब जबकि खनन माफिया का डंपर अरावली इलाके पर लगातार आरी चला रहा है, जिसमें हजारों एकड़ भूमि तबाह हो चुकी है। दशकों से जारी अवैध खनन पर तंत्र की उदासीनता के चलते नकेल नहीं कसी जा सकी। बताते हैं कि पिछले दिनों नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल यानी एनजीटी में हरियाणा के अरावली से जुड़े इलाकों में करीब सोलह जगहों पर अवैध खनन की जानकारी दी गई थी। दरअसल, नूंह के अलावा फरीदाबाद व गुरुग्राम के इलाके में भी अवैध खनन होने के आरोप लगते रहे हैं। जो अरावली के प्राकृतिक संरक्षण क्षेत्र को भी तबाह कर रहे हैं। जिस बाबत मई में एनजीटी को अरावली बचाओ मूवमेंट की ओर से शिकायत की गई थी, उसमें कहा गया है कि अरावली पर्वत श्रृंखला की सुरक्षा के नाम पर महज औपचारिकताएं पूरी की जा रही हैं। यहां पर्याप्त संख्या में सुरक्षा से जुड़े लोगों की उपस्थिति नहीं है, जिसमें आसपास के गांवों के लोगों की भूमिका की ओर भी इशारा किया गया है। जिस पर एनजीटी ने इस बाबत कमेटी बनाने व सर्वे करने के निर्देश भी दिये थे। इस मामले में अब अगली सुनवाई अगस्त के अंतिम सप्ताह में होनी है। अरावली के पारिस्थितिकी संकट के बाबत न्यायालय भी बार-बार चिंताएं जता चुका है जो हमारे विकास के मॉडल पर भी एक प्रश्न चिन्ह है।

आयुर्वेद ज्ञान को और तार्किक बनाने पर बल

जुलाई के पहले हफ्ते में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आगामी नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं को लेकर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया था। इस बैठक में मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में बृहद-विषयक सुधार करने का परामर्श दिया गया, जिसमें चिकित्सा पढ़ाई भी शामिल है। 'स्वास्थ्य देखभाल में बहु-विकल्प' को बढ़ावा देने के लिए आए कई विचारों में एक यह था कि स्वास्थ्य शिक्षा को एकीकृत किया जाए। यह सुझाव आया कि एलोपैथी मेडिकल पढ़ाई के छात्रों को पुराने वक्त से चली आ रही भारतीय इलाज पद्धति जैसे कि आयुर्वेद की प्राथमिक समझ होनी चाहिए और इसी तरह आयुर्वेद के शिक्षार्थियों को एलोपैथी का प्राथमिक ज्ञान हो। जहां नई शिक्षा पद्धति में इस किस्म के तमाम प्रावधानों के बारे में विचार चला हुआ है वहीं मौजूदा आयुर्वेदिक शिक्षा पाठ्यक्रम को लेकर कुछ चिंतित स्वर भी उभरे। 'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल एथिक्स' में छपे एक स्वीकारोक्ति लेख में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयुर्वेदिक शरीर विज्ञान के एक प्रोफेसर ने भारत में आयुर्वेद की पढ़ाई में गंभीर गलतियों का जिक्र किया। किशोर पटवर्धन के इस लेख से बहुतों की पेशानी पर बल पड़े क्योंकि वे एक जाने-माने आयुर्वेद अनुसंधानकर्ता और बहुत ज्यादा पढ़ी जाने वाली आयुर्वेदिक शरीर विज्ञान किताबों के लेखक हैं।

आयुर्वेद की विधा पुरातन ग्रंथ चरक संहिता और सुश्रुत एवं वाग्भट्ट द्वारा इसकी विवेचना पर आधारित है। समय-समय पर अन्य टिप्पणीकार और स्नातकों ने अपनी-अपनी व्याख्या कर इन आलेखों का पुनर्लेखन किया। पिछली कुछ शताब्दियों में, इनके मूल पाठ को आधुनिक मेडिकल साइंस में शारीरिक संरचना, शरीर विज्ञान, रोग-विज्ञान, जैव-रसायन, सूक्ष्म जैविकी में पाए नए ज्ञान के आलोक में व्याख्या कर फिर से लिखा गया। इन व्याख्याओं का उद्देश्य सदा यह परिणाम बनाने के लिए था कि आयुर्वेद ज्ञान और मौजूदा मेडिकल सिद्धांतों में काफी समानता है। प्रयास था कि आधुनिक खोजों के चश्मे से देखकर पुरातन ज्ञान को वैध और तार्किक बनाया जाए। एक अध्यापक और किताबों के लेखक के तौर पर पटवर्धन ने भी ठीक यही किया। उन्होंने माना कि मैंने जानबूझकर पुरातन सूक्तियों में सबसे ज्यादा उन्हीं तार्किक सूक्तियों को चुना जो आधुनिक समय के हिसाब से प्रासंगिक या सही प्रतीत हों। अब वे खुद कह रहे हैं कि पुराने पड़ चुके विचारों को सही सिद्ध करने का उनका यह रवैया गलत था, हालांकि विद्यार्थियों को पढ़ाते और पुस्तकें लिखते समय स्वयं यही किया।

उदाहरणार्थ, आयुर्वेद सूक्तियों में जैसा कि आयुर्वेद शिक्षा एवं शल्य चिकित्सा के स्नातक कोर्स (बीएएमएस) में पढ़ाया जाता है, इसमें कहा गया कि वीर्य का निर्माण अस्थि-मज्जा में होता है जो खून में मिलकर पूरे शरीर में बहता है। इस वक्तव्य को सही सिद्ध करने के लिए, आयुर्वेद की आधुनिक किताबों में यह दलील दी गई कि 'शुक्र' दो किस्म का हो सकता है। यानी एक का मतलब वीर्य है तो दूसरा वह पदार्थ जो समूचे शरीर में मौजूद होता है जैसे कि प्रजनन हार्मोन्स। पटवर्धन एक अन्य उदाहरण मूत्र बनाने में गुर्दे की भूमिका का देते हैं। जहां इस बात के कोई ठोस सबूत नहीं हैं कि पुरातन भारतीयों को मूत्र-तंत्र का सटीक पता था, लेकिन पुनर्व्याख्या करके यह यकीन दिलवाने की कोशिश की गई कि सब कुछ मालूम था। इस तरह नई मेडिकल खोजों और सिद्धांतों से होड़ लेने के लिए पुरानी पाठ्य सामग्री में घुमाकर व्याख्याएं जोड़ने का काम जारी रहा ताकि यह लोकप्रिय धारणा पुख्ता रहे कि पुराने भारतीय सब कुछ जानते थे और अपने समय से बहुत आगे थे। चिंता इस बात की है कि इस किस्म की अतार्किक और गैर-वैज्ञानिक व्याख्याएं देशभर में सैकड़ों की संख्या में चल रहे आयुर्वेद शिक्षा कॉलेजों में लगी पाठ्य पुस्तकों का हिस्सा हैं।

कुछ आयुर्वेदिक दवाओं में भारी धातुएं जैसे कि पारा और कैडमियम की अधिक मात्रा के बारे में विवादों के चलते यूरोप और अमेरिका में पहले ही इन पर नज़र है। साक्ष्य आधारित रवैया अपनाने की बजाय आयुर्वेद के पैरोकारों ने पाठ्य पुस्तकों में आधुनिक सिद्धांतों से मेल खाती व्याख्याएं जोड़ने की राह पकड़ी। उनका कहना है कि आयुर्वेद का भस्म-सिद्धांत आधुनिक काल के नैनो-मेडिसिन के अनुरूप है, इसलिए आयुर्वेद आधुनिक मेडिकल विज्ञान से कहीं आगे रहा है। जबकि आयुर्वेदिक दवाओं में भारी धातुओं की उपस्थिति पर मुख्य चिंता जारी है, जिसके कारण कई मामलों में जिगर को भारी नुकसान की खबरें मिली हैं। केरल के जिगर रोग विशेषज्ञ साइरियाक एब्बी फिलिप विज्ञान पत्रिकाओं में ऐसे मामलों की सूचना लगातार देते आए हैं, लेकिन आयुर्वेदिक दवाओं के विषैले असर को उजागर करने के लिए उनकी खासी खिंचाई की जाती है।

जो कुछ भी पुरातन ग्रंथों में है, उसको तार्किक बनाने का प्रयास करना, विचारधारा और राजनीतिक रूप से फायदा लेने के लिए आयुर्वेद की श्रेष्ठता का दावा करने के वास्ते है। विज्ञान विभाग भी इन पाठ्य पुस्तकों में दिए गए दावों का वैज्ञानिक आधार ढूंढ़ने के वास्ते परियोजनाओं को धन दे रहा है, चाहे यह गोमूत्र हो या त्रिदोष सिद्धांत। सरकार पुरातन पद्धति का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की अनुमति देना नहीं चाहती। वह चाहती है कि पुरातन ज्ञान को व्यावहारिक, आधुनिक और वैज्ञानिक बनाकर पेश किया जाए। कोविड-19 महामारी के इलाज में आयुर्वेदिक उपचार को बढ़ावा देने के लिए सरकारी एजेंसियों ने हुलमुल रवैया अपनाया था और कुछ आयुर्वेदिक कंपनियों द्वारा किए गए अवैज्ञानिक दावों का समर्थन किया।

दिनेश सी. शर्मा

मणिपुर के एक पत्रकार को इसलिए जेल में डाल दिया कि उसने कोविड का इलाज गोमूत्र से करने पर शंका व्यक्त की थी। शरीर पर भारी धातुओं के विषैले असर का संज्ञान लेने की बजाय केंद्रीय आयुष मंत्रालय ने एब्बी फिलिप पर पुरातन चिकित्सा पद्धति को बदनाम करने का आरोप लगाया। हो सकता है कल को मंत्रालय और शुद्धतावादी तत्त्व पटवर्धन के साथ भी यही करें।

किसी पद्धति का आलोचनात्मक आकलन करना बहुत जरूरी होता है। जैसी संहिता एलोपैथिक दवाओं के लिए है, आयुर्वेदिक दवाओं को भी उसी तरह नियामकों के कड़े और सघन क्लीनिकल परीक्षण से गुजरकर दुष्प्रभाव, सुरक्षा और प्रभावशीलता सिद्ध करनी चाहिए। केवल योग्यता प्राप्त चिकित्सकों और उत्पादकों को आयुर्वेदिक दवाओं से इलाज और भारतीय पद्धति की दवाएं बनाने की इजाजत हो। आयुर्वेदिक दवाओं का उत्पादन आधुनिक दवाओं की तर्ज पर मानकों, गुणवत्ता, परीक्षण, लेबलिंग और विपणन के अनुसार हो। नई शिक्षा नीति भारतीय उपचार पद्धति के लिए बने राष्ट्रीय आयोग को आयुर्वेदिक शिक्षण पाठ्यक्रम की समीक्षा का मौका दे रही है। आयुर्वेदिक उपचार पद्धति को विचारधारा के फंदे से मुक्त कर फलने-फूलने दिया जाए।

फ्री की राजनीति

सिद्धार्थ शंकर

देश में फ्री बांटने की राजनीति के दुष्प्रभाव पर एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चिंता जताई है। बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का लोकार्पण करने के बाद पीएम मोदी ने तंज कसते हुए कहा कि, देश में मुफ्त की रेवड़ी बांटकर वोट बटोरने का कल्चर लाने की कोशिश हो रही है। ये रेवड़ी कल्चर देश के विकास के लिए बहुत घातक है। इससे देश के लोगों को बहुत सावधान रहना है। पीएम मोदी ने कहा कि, हम कोई भी फैसला लें, निर्णय लें, नीति बनाएं, इसके पीछे सबसे बड़ी सोच यही होनी चाहिए कि इससे देश का विकास और तेज होगा। आर्थिक विकास की नीतियां तब अपने लक्ष्य से भटक जाती हैं जब उनमें राजनीतिक सोच और उसके फायदे हावी हो जाते हैं। मुफ्त बांटने की राजनीति का अर्थ भी यही है। वैसे तो राजनीतिक दलों द्वारा जनता को मुफ्त सुविधाएं देने का कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है। दूरगामी आर्थिक विकास की सोच इस पक्ष में नहीं है। कई राज्यों में यह भी देखने को मिल रहा है कि कर संग्रह बढ़ाने के मकसद से शराब की बिक्री पर अधिक जोर दिया जा रहा है, क्योंकि आय बढ़ाने के अन्य स्रोत वर्तमान में उनके पास नहीं हैं। लोकलुभावन आर्थिक विकास की इस सोच ने क्या समाज को विनाशकारी राह पर नहीं मोड़ दिया है? पिछले कुछ वर्षों से आर्थिक विकास के मोर्चे पर एक नई राजनीतिक सोच पैदा हुई है। अब लोकलुभावन विकास को जन कल्याणकारी योजनाओं द्वारा हर सत्तापक्ष भुनाना चाहता है, जिसका वास्तविक आधार कुछ वस्तुओं और सेवाओं को 'मुफ्त बांटना' हो गया है। मुफ्त बांटने की यह राजनीतिक सोच आर्थिक बदहाली को आमंत्रण दे रही है। यह चिंता आरबीआई द्वारा प्रस्तुत एक रिपोर्ट में भी जाहिर है। वर्तमान परिदृश्य में दस राज्यों की आर्थिक स्थिति डावांडोल है, क्योंकि उनका वित्तीय कर्ज और राज्य के जीडीपी का अनुपात बहुत अधिक बढ़ रहा है। इन सबमें पंजाब की स्थिति विकट है। यह लोकलुभावन कदम इसलिए गलत है, क्योंकि इससे आर्थिक नीतियां बुरी तरह प्रभावित होती हैं। इसके विपरीत आज जरूरत है कि सभी राज्य अपने यहां डिजिटल तकनीक और सामाजिक सुविधाओं के बुनियादी ढांचे को तेजी से विकसित करें तथा आर्थिक नीतियों को रोजगारोन्मुख बनाने को सर्वोपरि रखें। मुफ्त बांटने की इन योजनाओं के चलते राज्यों के पूंजीगत खर्च लगातार कम होते जा रहे हैं, जिसके कारण नई संपदा का विकास नहीं हो रहा और आय नहीं बढ़ रही है। यह सोच भविष्य के बहुत बड़ा आर्थिक संकट का द्वार है। आंकड़ों के मुताबिक राज्यों द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सब्सिडी पर कुल खर्च वित्त वर्ष 2021-22 में 11.2 प्रतिशत से बढ़ा है। पिछले तीन वर्षों में इस पक्ष पर झारखंड, केरल, ओडिशा, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश मुख्य रहे हैं। रिपोर्ट में प्रस्तुत एक बात और चिंता का सबब है कि पिछले कुछ वर्षों से राज्यों के संदिग्ध दायित्वों का आर्थिक बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है, जिसके अंतर्गत विभिन्न राज्य सरकारी निकाय वित्तीय कर्ज ले रहे हैं, जिनकी गारंटी राज्य सरकारें दे रही हैं। क्रिसिल की ताजा रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2021-22 के अंतर्गत राज्यों के संदिग्ध आर्थिक दायित्व जीडीपी के 4.5 प्रतिशत के बराबर हो गए हैं। इन सब में मुख्य भूमिका राज्यों के विद्युत विभाग की है, जिनके हिस्से में चालीस प्रतिशत का दायित्व आ रहा है। अन्यों के अंतर्गत सिंचाई, बुनियादी ढांचे का विकास, भोजन और पानी की आपूर्ति के क्षेत्र मुख्य हैं। कुछ राज्यों का राजकोषीय घाटा लगातार बढ़ता जा रहा है। मतलब स्पष्ट है कि राज्यों की कमाई और ख़र्च के बीच में अंतर लगातार गहरा रहा है। आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार आंध्र प्रदेश, बिहार, राजस्थान और पंजाब में राजकोषीय घाटा वर्ष 2020-21 में 15वें वित्त आयोग द्वारा निश्चित किए गए स्तर से ऊपर था। दूसरी तरफ इन राज्यों के स्वयं के कर संग्रहण में भी लगातार कमी हो रही है, जो कि चिंताजनक है। आरबीआई की रिपोर्ट के आंकड़ों के अनुसार इन दस राज्यों के अंतर्गत बिहार की हालत बहुत चिंताजनक है, क्योंकि इसका खुद का कर संग्रह पिछले पांच वर्षों में कुल कर संग्रह का मात्र 23.5 प्रतिशत है, जबकि केंद्र पर इसकी निर्भरता करीब 75 प्रतिशत है। अब लगातार विपरीत होती जा रही कुछ राज्यों की आर्थिक स्थिति को तुरंत संभालना होगा। पड़ोसी मुल्क श्रीलंका इस बात का जीता-जागता उदाहरण है कि किस तरह विदेशी कर्ज ने उसे बर्बाद किया। भारत की अर्थव्यवस्था आज वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान रखती है, परंतु राज्यों की बिगड़ती आर्थिक स्थिति विदेशी निवेशकों के लिए एक घबराहट का सूचक बनती जा रही है। इसे तुरंत रोकना होगा, वरना इस संकट के प्रभाव मुल्क की आर्थिक स्थिति पर भी जल्द ही दिखने लग जाएंगे।

एक सड़क, दो राष्ट्रपति और वो धर्म की विदुषी

ज्ञानी जैल सिंह 1982-87 के दौरान राष्ट्रपति रहे। वे वास्तव में जन नेता थे और वे जब राष्ट्रपति थे तब राष्ट्रपति भवन के दरवाजे आम जन के लिए लगभग खुल गए थे। राष्ट्रपति भवन के भीतर की एक सड़क का नाम हुक्मी माई रोड है। अगर आप दारा शिकोह रोड (पहले डलहौजी रोड) के रास्ते राष्ट्रपति भवन में गेट नंबर 37 से अंदर जाते हैं, तब आपको हुक्मी माई रोड मिलती है। ज्ञानी जैल सिंह ने राष्ट्रपति पद पर रहते हुए राष्ट्रपति भवन परिसर की इस सड़क का नाम हुक्मी माई रोड रखवाया था। वह हिन्दू और सिख धर्म की प्रकांड विद्वान थीं।

नामधारी सिखों का एक प्रतिनिधिमंडल ज्ञानी जैल सिंह से मिला था। इस टोली में झारखंड के प्रमुख नामधारी सिख नेता इंदरजीत सिंह नामधारी भी थे। इन्होंने ज्ञानी जैल सिंह से आग्रह किया कि वे हुक्मी माई जी के नाम पर नई दिल्ली की किसी सड़क का नाम रखवा दें। जैल सिंह जी को हुक्मी माई की शख्सियत की जानकारी थी। उन्होंने तुरंत इस बाबत निर्देश दिए। जाहिर है, राष्ट्रपति की इच्छा को लागू करने में नई दिल्ली नगर परिषद (एनडीएमसी) ने देरी नहीं की।

भारत के दसवें राष्ट्रपति केआर नारायणन की शख्सियत के बहुत से आयाम थे। वे सियासी नेता, डिप्लोमेट और शिक्षाविद? थे। वे जब राष्ट्रपति भवन में रहने लगे तो उन्हें एक सड़क का नाम समझ में नहीं आया। वे जानना चाहते थे कि उस सड़क का नाम किसके नाम पर रखा गया। कहते हैं कि एक दिन डॉ. के.आर. नारायणन का काफिला राष्ट्रपति भवन से दारा शिकोह रोड की तरफ बढ़ा तो उनकी नजर वहां पर स्थित एक छोटी-सी सड़क के नाम पर पड़ी। नाम था हुक्मी माई रोड। वे चौंके इस नाम को पढ़कर। वे जब भी उस ओर से गुजरते तो हुक्मी माई रोड नाम पढ़कर सोचने लगते कि ये नाम किस शख्सियत का है। उन्होंने अपने स्तर पर इस नाम की असलियत जानने की भी चेष्टा की। पर बात नहीं बनी। एक दिन उन्होंने अपनी जिज्ञासा अपने स्टाफ के माध्यम से नई दिल्ली नगर परिषद (एनडीएमसी) के चेयरमैन के पास भिजवाई। पूछा गया कि हुक्मी माई कौन हैं?

राष्ट्रपति के दफ्तर से मांगी गई जानकारी के बाद तो एनडीएमसी का सारा स्टाफ लग गया हुक्मी माई के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए। आखिर देश के महामहिम कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहते थे।

हुक्मी माई नामधारी सिख समाज की एक पूजनीय स्त्री थीं। वो हिन्दू और सिख धर्म की प्रकांड विद्वान थीं। उनका जन्म पंजाब में सन् 1870 के आसपास हुआ। वह विश्व बंधुत्व, प्रेम और भाई-चारे का संदेश देती रहीं। हुक्मी माई ने भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर्जर रूढ़ियों और पाखंडों पर हल्ला बोलते हुए जन-साधारण को धर्म के ठेकेदारों, पण्डों, पीरों आदि के चंगुल से मुक्त किया। उन्होंने प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाईचारे का संदेश दिया था। जब महामहिम को हुक्मी जी के बारे में जानकारी दी गई तो वे संतुष्ट हुए।

इस बीच, ज्ञानी जैल सिंह का 1956 से ही दिल्ली से संबंध कायम हो गया था। वे तब बतौर राज्यसभा सदस्य दिल्ली आ गए थे। वे राष्ट्रपति पद से मुक्त होने के बाद राजधानी में ही रहने लगे थे। सरकार ने उन्हें तीन मूर्ति के करीब सर्कुलर रोड में सरकारी आवास अलॉट कर दिया था। पंजाबी के कवि और खालसा कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. हरमीत सिंह ने बताया कि ज्ञानी जैल सिंह पहाड़गंज में बाबा नामदेव लाइब्रेरी बिल्डिंग के उद?घाटन के लिए 1987 में आए थे। वे बेहद विनम्र और सज्जन पुरुष थे। उनसे जो मिलने आता था उससे वे आराम से बात करते थे। मिलने वाले को अहसास करवा देते थे कि वह उनके लिए खास इंसान है। उन्होंने सिख धर्म के ग्रंथों की पढ़ाई की थी इसलिए उन्हें ज्ञानी कहा जाने लगा।

ज्ञानी जैल सिंह की तरह ही मां की तरह का स्नेह और प्यार देने वाली उनकी पत्नी प्रधान कौर भी थीं। प्रधान कौर राष्ट्रपति भवन के चतुर्थ श्रेणी के मुलाजिमों के घरों में सुख-दुख में भाग लेने चली जाती थीं। किसी परिवार से उन्हें शादी-ब्याह का निमंत्रण मिलता तो वह उपहार लेकर पहुंच जाती थी। हालांकि वह अपने पति के साथ देश-विदेश की यात्राओं में तो नहीं जाती थीं। इस बीच, राजधानी के वरिष्ठ पत्रकार मनमोहन शर्मा बताते हैं कि उनकी ज्ञानी जैल सिंह से दोस्ती थी। एक बार उनका राष्ट्रपति भवन काफी दिनों तक जाना नहीं हुआ। तब ज्ञानी जैल सिंह ने अपने एक स्टाफ को उनके लक्ष्मी नगर स्थित घर में उनका हाल-चाल लेने के लिए भेजा क्योंकि उनके घर में फोन नहीं था।

बहरहाल, डॉ. केआर नारायणन जब राष्ट्रपति चुने गए तब दलितों के पक्ष में देश में माहौल था। केआर नारायणन एक गंभीर व्यक्तित्व वाले इंसान थे। उनका जन्म एक बेहद गरीब परिवार में हुआ था जिस कारण उन्होंने बचपन से ही परेशानियों से निपटना सीख लिया था। वे 1992 से 1997 तक भारत के नौवें उपराष्ट्रपति भी रहे।

लेखक– विवेक शुक्ला

भक्त, अभक्त, महाभक्त एवं परमभक्तों का दर्शन

हमारे देश की राजनीति में मुख्यतः दो ही वर्ग पाये जाते हैं, नेता और कार्यकर्ता। हालांकि, इन दो वर्गों में भी कई श्रेणियां होती हैं... इन्हें आप राजनीतिक जातियां भी कह सकते हैं। उदाहरणस्वरूप जिन्हें हम सामान्य जिन्दगी में शत्रु मानते हैं, वे राजनीति में अभक्त माने जाते हैं, जो समर्थक अथवा हितैषी होते हैं, वे 'भक्त' और जो महा-हितैषी होते हैं, वे 'महाभक्त', जबकि कुछ ऐसे लोग भी सामान्य जीवन की भांति हमारी राजनीतिक व्यवस्था में पाये जाते हैं, जो हितैषियों में भी परम हितैषी होते हैं, उन्हें हमारे देश की राजनीति में श्रद्धा से 'परम भक्त' कहा जाता है। यह परम भक्त का पद किसी भी राजनीतिक पार्टी की ओर से दिया जाने वाला सर्वोच्च पद होता है, जैसे कि किसी देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान हो।

राजनीति में यह परम भक्त का पद किसी को भी बहुत मुश्किल से वर्षों की तपस्या के बाद प्राप्त होता है... और पुश्तों तक चलता रहता है। वस्तुतः यह पद राजनीतिक पार्टियां उन्हें ही प्रदान करती हैं, जो किसी भी परिस्थिति में अपने राजनीतिक-धर्म का परित्याग नहीं करते... अर्थात? जो सदैव अपने नेता और दल के प्रति वफादार बने रहते हैं, चाहे इसके लिए उन्हें अपनी जान ही क्यों न गंवानी पड़े। ऐसे लोग नेता और पार्टी के साथ अंतिम सांस तक टिके रहते हैं... चाहे जितनी गरीबी आ जाये... ओस चाटकर ही क्यों न जीना पड़े, लेकिन नेता और पार्टी का दामन कभी नहीं छोड़ते। इसी प्रकार राजनीति में भक्त वे लोग होते हैं, जो अपने दल और नेता के प्रति वफादार तो होते हैं, परन्तु ऐसा देखा गया है कि प्रायः छोटे झटकों या कहें कि निम्नतम लाभ की गुंजाइश में भी वे अपना 'धर्म' बदल लेते हैं। बस उन्हें एक मनभावन बहाने की प्रतीक्षा रहती है।

वहीं महाभक्त लोग तब तक वफादार बने रहते हैं, जब तक कि उन्हें अपना राजनीतिक जीवन ही संकट में पड़ता न दिखाई देता हो, या कहें कि अब तक जो अप्राप्य था, वह 'धर्म' बदलने की स्थिति में प्राप्त होने की संभावना प्रकट न हो गयी हो। ये महाभक्त लोग थोड़े परिपक्व होते हैं, जो आसानी से नहीं टूटते। इन्हें तोड़ने के लिए दूसरे दलों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है। जहां तक अभक्तों की बात है, तो राजनीति में अभक्त यानी वे लोग, जिनका कार्य ही बस राजनीतिक विरोध करना होता है। ऐसे लोग सामान्यतः दल के बाहर होते हैं, परन्तु कभी-कभी इन्हें पार्टी के भीतर भी देखा जा सकता है। ये सदा-सर्वदा असंतुष्ट ही रहते हैं। यही कारण है कि ये बात-बात पर विरोध की तलवारें खींच लेते हैं।

नगरपालिका में एक बार फिर से भाजपा की बनेगी परिषद

भानपुरा नगर परिषद में कांग्रेस तो मंदसौर में भाजपा को मिला बहुमत

शामगढ़ में असमंजस की स्थिति तो सीतामऊ में कांग्रेस का हुआ सफाया

माही की गूंज, मंदसौर। साहिल अगवान

6 जुलाई को हुए मतदान के बाद रविवार को जनता के दिए हुआ फैसला सामने आया। इसमें भाजपा की एकतरफा अंदाज में जीत हुई और कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा। इसके साथ ही पिछले 40 वर्षो से मंदसौर नपा पर चला आ रहा भाजपा का कब्जा इस बार भी बरकरार रहा। पिछले चुनाव से भी आधी ही सीटें इस बार कांग्रेस को मिली। 40 में से भाजपा ने 29 सीटों पर जीत हासिल की और स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया। वहीं कांग्रेस 8 सीटों पर ही सीमट गई तो तीन पर निर्दलीय जीतकर आए है। मतगणना की शुरुआत के साथ ही भाजपा के पक्ष में रुझान आने का दौर शुरु हुआ जो अंत तक जारी रहा। एक-एक वार्ड के नतीजों के साथ भाजपा के खेमे में उत्साह का दौर शुरु हुआ। वहीं हार के बाद कांग्रेस के प्रत्याशी व नेता से लेकर पदाधिकारी एक-एक कर निराश होकर घर लौट गए। सबसे पहले वार्ड क्र. एक का परिणाम आया। गणना के बाद निर्वाचन प्रमाण पत्र कलेक्टर ने सभी जीते हुए प्रत्याशियों को दिए।

भाजपा ने जीत के बाद निकाला जुलूस, मनाई होली-दीवाली

दोपहर 12 बजे गणना पूरी होने और प्रमाण पत्र मिलने के बाद शहर में जुलूस निकलने का दौर शुरु हुआ। शहर के श्रीकोल्ड चौराहा पर सभी वार्डो के कार्यकर्ताओं से लेकर समर्थको की भीड़ जमा हो गई। भाजपा ने आतिशबाजी करने के साथ रंग-गुलाल भी जमकर उड़ाया। परिणाम के बाद भाजपा ने होली-दीवाली एक साथ मनाई और पूरे शहर में सभी जीते हुए प्रत्याशियों का जुलूस निकाला गया। वहीं कांग्रेस खेमा निराशा नजर आया। हालांकि भाजपा की जीत और जुलूस में सांसद-विधायक शहर में मौजूद नहीं रहें। राष्ट्रपति चुनाव के चलते सांसद दिल्ली तो विधायक भोपाल में होने के कारण वह शहर में मौजूद नहीं रहे।

सांसद के वार्ड में मिली हार तो विधायक के वार्ड में मिली जीत

शहर के 40 वार्ड में चुनाव के दौरान सबसे अधिक फोकस वार्ड क्र. 7 और वार्ड क्र. 39 पर था। वार्ड क्र. 7 सांसद का गृहवार्ड है तो वार्ड क्र. 39 विधायक का। गणना के बाद आए परिणाम में सांसद सुधीर गुप्ता के वार्ड क्र. 7 में भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष संजय मुरडिया हार गए और यहां कांग्रेस के तरुण शर्मा को जीत मिली, जबकि विधायक के वार्ड क्र. 39 में भाजपा की भारती पाटीदार जीत गई।

पूर्व नपाध्यक्ष व उपाध्यक्ष हारे चुनाव

इधर पूर्व नपाध्यक्ष व कांग्रेस के वर्षो से ब्लॉक अध्यक्ष हनीफ शेख को वार्ड क्र. 34 में इस बार करारी हार का सामना करना पड़ा। उनके वार्ड में निर्दलीय शराफत शेख ने जीत हासिल की। वहीं पूर्व नपाध्यक्ष सुनील महाबली बागी होकर वार्ड क्र. 11 से पूर्व नपाध्यक्ष राम कोटवानी के खिलाफ चुनाव लड़े थे वह चुनाव हार गए। तो एनएसयूआई जिलाध्यक्ष सुनील बसेर की पत्नी प्रियंका बसेर वार्ड क्र. 39 से बड़े अंतर से चुनाव हार गई। वहीं कई अल्पसंख्यक वार्ड में भी भाजपा ने वर्षो बाद जीत हासिल की है। वहीं कांग्रेस जिलाध्यक्ष नवकृष्ण पाटिल के वार्ड में कांग्रेस प्रत्याशी कुसुम विश्वकर्मा तीसरे नंबर पर रही।

दिग्गजों ने हासिल की जीत

नपा के चुनाव में पूर्व गृहमंत्री कैलाश चावला की पुत्र वधु नम्रता चावला ने वार्ड क्र. एक से तो भाजपा किसान मोर्चा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बंशीलाल गुर्जर की पत्नी रमादेवी गुर्जर ने वार्ड क्र. 3 से तो वार्ड क्र. 39 से पिछड़ा मोर्चा प्रदेश मंत्री धीरज पाटीदार की पत्नी भारती पाटीदार व वार्ड क्र. 6 से पूर्व मंडल अध्यक्ष नरेश चंदवानी की पत्नी निर्मला चंदवानी ने जीत हासिल की। तो वार्ड 11 में पूर्व नपाध्यक्ष राम कोटवानी जीत गए है। वार्ड 1 में 22 वर्षो बाद भाजपा को जीत मिली है। तो वहीं कई अल्पसंख्यक क्षेत्र के कई वार्डो में भाजपा पहली बार जीतकर आई है।

29 पर भाजपा, 8 पर कांग्रेस और 3 निर्दलीय जीतें

40 वार्डो वाली मंदसौर नगर पालिका में भाजपा ने एकतरफा अंदाज में बहुमत हासिल किया। भाजपा को 29 वार्डो में जीत मिली। तो वहीं कांग्रेस सिर्फ 8 सीट पर सीमट गई। पिछले चुनाव में कांग्रेस के 17 पार्षद थे लेकिन इस बार 8 तक ही रह गए। वहीं तीन सीटें निर्दलीय ने एकतरफा अंदाज में जीती है। जो तीन निर्दलीय जीते है उनमें से भी दो भाजपा व एक कांग्रेस के बागी है।

सहानुभूति की लहर में निर्दलीय के आगे धराशायी हो गए दल

शहर के तीन वार्डो में निर्दलीय जीतकर आए है। इसमें दो भाजपा समर्थित है। दोनों ही वार्ड में सहानुभूति की लहर में जीतकर आए है। सहानुभूति की इस लहर में दोनों प्रमुख दलों की रणनीति काम नहीं आई और उन्हें हार का सामना करना पड़ा। वार्ड क्र. 19 में सुनील बंसल निर्दलीय जीते है। कोविड के समय मुक्तिधाम से लेकर राशन, भोजन पहुंचाने के अलावा किए कामों से सहानुभूति मिली। वहीं वार्ड क्र. 20 में दिव्या अनूप माहेश्वरी ने निर्दलीय होकर जीत हासिल की। माहेश्वर को भाजपा ने टिकिट दिया था लेकिन अंतिम समय में प्रदेश संगठन के हस्तक्षेप के बाद टिकिट काटा था और वह निर्दलीय लड़े। टिकिट कटने के कारण सहानुभूति मिली। वहीं वार्ड क्र. 34 में कांग्रेस के वर्षो से ब्लॉक अध्यक्ष व पूर्व नपा अध्यक्ष हनीफ शेख को निर्दलीय शराफत शेख ने पटखनी दी।

चावला, गुर्जर, पाटीदार में से एक बनेगी अध्यक्ष

मंदसौर नगर पालिका की सीट ओबीसी महिला के लिए आरक्षित है। भाजपा ने 40 वार्डो में करीब 13 ओबीसी की महिलाओं को टिकिट दिया था और इसमें से कई ने जीत हासिल की है। ऐसे में भाजपा की कई ओबीसी की महिलाएं जीती है। तो भाजपा में अध्यक्ष के दावेदार कई है, लेकिन अध्यक्ष के लिए सीधे तौर पर भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बंशीलाल गुर्जर की पत्नी रमादेवी गुर्जर, पूर्व मंत्री कैलाश चावला की पुत्रवधु नम्रमा और पिछड़ा मोर्चा के प्रदेश मंत्री भारती पाटीदार में होड़ है। परिणाम के साथ ही अध्यक्ष के लिए समीकरण बनने का दौर भी शुरु हो गया है।

मंदसौर नगर परिषद में भाजपा की आंधी

15 में से 10 सीटें भाजपा ने जीती, कांग्रेस 4 व एक निर्दलीय

नगर परिषद के 15 वार्डो के पार्षद पदों की मतगणना रविवार सुबह 9 बजे से हायर सेकंडरी स्कूल में शुरु हुई। नगर परिषद में इस बार भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिला है। भाजपा ने 10 वार्डों में जीत दर्ज की है। वही कांग्रेस को 4 वार्डो में ही जीत मिल सकी। एक वार्ड में भाजपा के बागी ने बाजी मारते हुए जीत दर्ज की। विजेता प्रत्याशियों को रिटर्निंग अधिकारी संजय मालवीय ने प्रमाण पत्र प्रदान किए। मतगणना को लेकर सुबह से ही स्कूल परिसर में भार संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया था। सघन चेंकिग के बाद अभ्यर्थियों एवं उनके अभिकर्ताओं को मतगणना स्थल में प्रवेश दिया गया। मतगणना के बाद भाजपा एवं कांग्रेस दोनों दलों के विजयी प्रत्याशियों ने पूरे नगर में डीजे के साथ विजय जूलूस निकाला।

वार्ड क्र. 4 में सबसे अधिक अंतर से तो, वार्ड 2 में सबसे कम अंतर से रही हार-जीत

नगर के वार्ड क्र. 4 में भाजपा दलोदा मंडल अध्यक्ष रामेश्वर धाकड़ की पत्नी अनिता धाकड़ ने सबसे बड़े अंतर से जीत दर्ज की। इस वार्ड में भाजपा की अनिता रामेश्वर धाकड़ को 282 वोट मिले। वही इनके निकटतंम रही निर्दलिय किंशकिंदा बाई धाकड़ को 61 मत मिले। यहां कांग्रेस की रेखा बाई धाकड़ तीसरे स्थान पर रही। इस प्रकार अनिता धाकड़ 221 मतों से जीती। इसी प्रकार वार्ड क्र. 2 में भाजपा के बागी बनकर निर्दलीय चुनाव लडने़ वाली सरिता कमलेश धाकड़ ने भाजपा की अंगुरबाला श्यामसुंदर को 10 वोटो से हराया।

2014 के चुनावों के मुकाबले भाजपा को लाभ तो कांग्रेस को नुकसान

2014 में हुए नगर परिषद चुनावों में भाजपा को 7 वार्डों में तो कांग्रेस को 6 एवं निर्दलीयों को 2 वार्डों में जीत मिली थी। इस बार भाजपा ने अपना जनाधार बढाते हुए 10 वार्डों में जीत हासील की है। कांग्रेस को 2 वार्डों का नुकसान हुआ है। वही इस बार निर्दलीय के खाते में भी मात्र 1 वार्ड गया है। वार्ड क्र. 2 से निर्दलीय जीत दर्ज करने वाली सरिता कमलेश धाकड़ भी भाजपा समर्थित ही है। मतगणना परिणामों के बाद भाजपा को स्पष्ट हुए भाजपा की परिषद बनना तय है। कांग्रेस के पूर्व नप अध्यक्ष घनश्याम अटोलिया ने वार्ड क्र. 8 से जीत दर्ज की। वही वार्ड क्र. 13 में पहली बार भाजपा को जीत मिल सकी।

पूर्व अध्यक्ष को भी जनता ने नकारा

पूर्व नगर परिषद रविशंकर सोनी ने 2014 में अध्यक्ष पद के लिए हुए प्रत्यक्ष चुनावों में भाजपा को हराकर जीत दर्ज की थी। किंतु इस बार रविशंकर सोनी के चाचू मित्र मंडल के सभी प्रत्याशियों को जनता ने पूरी तरह नकार दिया। चाचू मित्र मंडल ने 6 प्रत्याशी मैदान में उतारे थे। जिसमें से एक भी जीत दर्ज नही कर सका।

भानपुरा नगर में कांग्रेस ने परचम लहराया

भानपुरा नगर में कांग्रेस ने परचम लहराया जहां कांग्रेस 9, भाजपा 5 व निर्दलीय ने एक सीटें जीती। भानपुरा में पूर्व मंत्री सुभाष कुमार सोजतिया का जादू चला। बात करें वार्ड क्रमांक 7 में कांग्रेस के प्रत्याशी को सबसे ज्यादा मतों से विजय मिली। वोटिंग प्रतिशत के हिसाब से कुल 559 मतों में से 406 मत कांग्रेस के प्रत्याशी मुर्तुजा अली हुसैन बोहरा को मिले। वहीं भाजपा के अब्बास अली को 67 वोट मिले। वार्ड क्र. 11 जहां पूरे नगर वासियों की निगाह टिकी हुई थी वहां भाजपा के कद्दावर नेता अजय तिवारी चुनाव हार गए, इस वार्ड से निर्दलीय प्रत्याशी श्री नाथ उपाध्याय चुनाव जीते। वार्ड क्र. 13 में कांग्रेस ने परचम लहराया, यहां कांग्रेस के विनोद भानपिया 44 मतों से जीते। यहां पर तंबोली समाज के तीन प्रत्याशी थे जिसमें निर्दलीय प्रत्याशी दिनेश मांदलिया दूसरे स्थान पर रहे। अध्यक्ष पद की प्रबल दावेदारी में नगर निकाय चुनाव अनारक्षित आरक्षण होने पर अध्यक्ष प्रबल दावेदारों में विनोद शिव भांनपिया, मुर्तुजा अली हुसैन बोहरा व शीतल भूटानी हो सकते हैं।

ये प्रत्याक्षी जीते

वार्ड क्र. 1 में भाजपा की प्रत्याशी रेखा पाटीदार, वार्ड क्र. 2 में कांग्रेस की प्रत्याशी शीतल भूटानी, वार्ड क्र. 3 में भाजपा की प्रत्याशी योगिता टोरा, वार्ड क्र. 4 में कांग्रेस की प्रत्याशी रेहाना जाकिर शेख, वार्ड क्र. 5 में कांग्रेस के प्रत्याशी मकसूद अंसारी, वार्ड क्र. 6 में कांग्रेस की प्रत्याशी रिजवाना मंसूरी, वार्ड क्र. 7 में कांग्रेस के प्रत्याशी मुर्तुजा अली बोहरा, वार्ड क्र. 8 में कांग्रेस के प्रत्याशी सुभाष बागड़ी, वार्ड क्र. 9 में भाजपा के प्रत्याशी कवरलाल भील, वार्ड क्र. 10 में कांग्रेस के प्रत्याशी रोडू लाल चारण, वार्ड क्र. 11 में श्रीनाथ उपाध्याय निर्मली, वार्ड क्र. 12 में भाजपा की प्रत्याशी कविता कसेरा, वार्ड क्र. 13 में कांग्रेस के प्रत्याशी विनोद शिव भानपिया, वार्ड क्र. 14 में कांग्रेस के प्रत्याशी कृष्णा बबलू गुर्जर व वार्ड क्र. 15 में भाजपा की प्रत्याशी सुरभि पिटू पनिहार ने जीत दर्ज की।

सीतामऊ में 15 में से 14 सीटे जीती भाजपा ने

नगरीय निकाय चुनाव के दूसरे चरण के रिजल्ट बुधवार को जारी किए गए। सीतामऊ नगर परिषद में 15 वार्डों में से 14 वार्डों में भाजपा ने जीत हासिल कर ली है। यहां कांग्रेस को सिर्फ 1 वार्ड में ही संतुष्ट होना पड़ा है।

नगर परिषद में भाजपा के प्रत्याशियों ने वार्ड क्र. 1 शांति बाई दिनेश वर्मा, वार्ड क्र. 2 सुमित रावत, वार्ड क्र. 3 मनोज शुक्ला, वार्ड क्र. 4 अनिल के पांडे, वार्ड क्र. 5 कृष्णा गौरव चोरड़िया, वार्ड क्र. 6 विवेक सोनगरा, वार्ड क्र. 7 राधा सोनी, वार्ड क्र. 9 वैभव जैन, वार्ड क्र. 10 अरुण कुमार सोनी, वार्ड क्र. 11 माया मांगीलाल चावड़ा, वार्ड क्र. 12 राजेंद्र देवरिया, वार्ड क्र. 13 सिंपल कमलेश केरवा, वार्ड, क्र. 14 निरुपमा विजय गिरोठिया, वार्ड क्र. 15 सुनीता राजेंद्र राठौर ने जीत दर्ज की। वही कांग्रेस की प्रत्याशी चाहिता बी शेख ने वार्ड क्र. 8 से जीत दर्ज कर कांग्रेस की लाज बचाई।

शामगढ़ नगर परिषद में किसी को पूर्ण बहुमत नहीं

शामगढ़ नगर परिषद में 15 सीटों में से 7 पर भाजपा और 6 पर कांग्रेस ने जीत दर्ज की है। वही दो प्रत्याशी निर्दलीय चुनाव जीत गए। अब निर्दलीय प्रत्याशी शामगढ़ नगर परिषद में बैठने वाली सरकार का फैसला करेंगे। वार्ड क्र. 1 में गोपाल पटेल कांग्रेस, वार्ड क्र. 2 में दीपक जांगड़े भाजपा वार्ड क्र. 3 में गोपाल जोशी निर्दलीय वार्ड क्र. 4 में पवन पांडेय कांग्रेस, वार्ड क्र. 5 में बंटी अश्क भाजपा, वार्ड क्र. 6 में सुनयना सोनू जायसवाल कांग्रेस, वार्ड क्र. 7 में पंकज मुजावदिया कांग्रेस, वार्ड क्र. 8 में सिद्धार्थ जोशी भाजपा, वार्ड क्र. 9 में कविता राजू यादव भाजपा, वार्ड क्र. 10 में नवीन फरक्या निर्दलीय, वार्ड क्र. 11 में नीलू खन्ना भाजपा, वार्ड क्र. 12 में गोपाल नन्दवानी भाजपा, वार्ड क्र. 13 में आरिफ बेग कांग्रेस, वार्ड क्र. 14 में सिंटू धामनिया भाजपा, वार्ड क्र. 15 में फारूक मेव कांग्रेस ने जीत दर्ज की है।

बाकी की नगर परिषदों के परिणाम

मल्हारगढ़ नगर परिषद के 15 वार्डों में से 9 पर भाजपा, 5 पर कांग्रेस और एक वार्ड में निर्दलीय प्रत्याशी ने जीत दर्ज की।

पिपलिया नगर परिषद के 15 वार्डो में 8 पर भाजपा, 5 पर कांग्रेस और 2 वार्ड में निर्दलीय प्रत्याशी ने जीत दर्ज की।

नारायणगढ़ नगर परिषद के 15 वार्डों में 10 पर भाजपा, 4 पर कांग्रेस और एक वार्ड में निर्दलीय प्रत्याशी ने जीत दर्ज की।

सुवासरा नगर परिषद के 15 वार्डों में 9 पर भाजपा, 6 पर कांग्रेस प्रत्याशी ने जीत दर्ज की।

गरोठ नगर परिषद के 15 वार्डो में 8 पर भाजपा, 7 पर कांग्रेस प्रत्याशी ने जीत दर्ज की।

भैसोदामंडी नगर परिषद के 15 वार्डों में से 7 पर भाजपा, 6 पर कांग्रेस और 2 वार्डों में निर्दलीय प्रत्याशी ने जीत दर्ज की।

शहर की सड़कों को चलने लायक बनाएं- कलेक्टर श्री जैन

माही की गूंज, शाजापुर।

शहर सहित जिले के अन्य शहरी क्षेत्रों की सड़कों को आमजनों के चलने-फिरने लायक बनाएं। इसके लिए नगरपालिका सीएमओ सड़कों पर दुकानदारों, हाथ ठेला चालकों एवं अन्य लोगों द्वारा किए गए अतिक्रमण को सख्ती से हटाएं। साथ ही यह मुहीम लगातार चलाएं। उक्त निर्देश कलेक्टर दिनेश जैन ने जिला परिवहन समिति की पाक्षिक बैठक में दिए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक जगदीश डावर, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती मिशा सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक टीएस बघेल, अनुविभागीय अधिकारी श्रीमती शैली कनाश, एसई एमपीएसईबी सुनील पटेल, जिला परिवहन अधिकारी एपी श्रीवास्तव, जिला शिक्षा अधिकारी अभिलाष चतुर्वेदी, जिला होमगार्ड कमाण्डेन्ट विक्रमसिंह मालवीय, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण रविन्द्र कुमार वर्मा, पीएचई विजयसिंह चौहान, जलसंसाधन टीके परमार, सीएमएचओ डॉ. राजू निदारिया, उपसंचालक पशु चिकित्सा डॉ. एके सिंह, जिला खनिज अधिकारी आरएस उइके, नगरपालिका सीएमओ राकेश चौहान, प्रधानमंत्री सड़क योजना एडीएम हुकुम सिंह, एजीएम एमपीआरडीसी अभिषेक गोखरू, यातायात निरीक्षक सतेन्द्र सिंह राजपूत उपस्थित थे।

बैठक में कलेक्टर ने शाजापुर एवं आसपास के अवारा पशुओं को टाण्डा बोर्डी की गौशाला में भेजने के निर्देश दिये। साथ ही आरईएस के कार्यपालन यंत्री को टाण्डाबोर्डी की गौशाला में वायर फेंसिंग करने के लिए कहा। बैठक में शाजापुर नगर में हाल ही में सड़कों पर लगाए गए स्पीड ब्रेकर के टूटने पर चर्चा के दौरान इन्हें दुरूस्त करने के निर्देश सीएमओ को दिये। कलेक्टर ने नगरपालिका सीएमओ को निर्देश दिये कि सब्जी बाजारों को एक निश्चित स्थान पर लगवाएं।

कलेक्टर ने कहा कि, देखने में आ रहा है कि सब्जी व्यवसायी अपनी मनमर्जी से कहीं पर भी खड़े होकर व्यवसाय कर रहे हैं, इससे यातायात में व्यवधान हो रहा है। कलेक्टर ने अतिक्रमण कर लगायी गई गुमटियों को भी हटाने के निर्देश दिये। चार्टेड बसों को पुराने डीपो कार्यालय में खड़े रहने के लिए निर्देशित करें तथा वहीं से सवारी बैठाने एवं उतारने का कार्य करने के निर्देश दिये। सड़क पर सवारी उतारने एवं चढ़ाने पर जुर्माना लगाएं। बैठक में जिला चिकित्सालय में पार्किंग ठेकेदार द्वारा अवैध वसूली करने एवं रसीद नहीं देने पर भी चर्चा हुई। कलेक्टर ने सीएमएचओ को निर्देश देते हुए कहा कि, अवैध वसूली करने की जाँच करें। राष्ट्रीय राजमार्ग के अनेक स्थानों पर बने अण्डरब्रीज में सड़कों पर हो रहे गड्ढों को दुरूस्त करने के निर्देश भी कलेक्टर ने संबंधित एजेंसी को दिये। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन सुविधा उपलब?ध कराने के लिए कलेक्टर ने जिला परिवहन अधिकारी को 5-5 मार्ग स्वयं तय करने के निर्देश दिये। साथ इन मार्गों पर स्वसहायता समूहों के माध्यम से वाहन चलाने के लिए कार्यवाही करने के निर्देश एनआरएलएम प्रबंधक श्रीमती प्रतिभा जैन को दिये। कलेक्टर ने जिला परिवहन अधिकारी को ÷गुड सेमेरिटन÷ योजना के बोर्ड लगाकर प्रचार करने के निर्देश दिये।

पुलिस अधीक्षक श्री डावर ने यातायात प्रभारी निरीक्षक को निर्देश दिये कि, वे स्थानीय व्यापरियों के साथ बैठक कर माल लोडिंग एवं अनलोडिंग करने वाले वाहनों के लिए समयसीमा निर्धारित कराएं। पशु चिकित्सा उपसंचालक रात्रि के समय सड़कों से पशु हटाने वाले वाहनों की लगातार मॉनिटरिंग करें।

यूथ महापंचायत के प्रतिभागियों के चयन हेतु जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित

माही की गूंज, रतलाम।

क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद की 116 वीं जयन्ती पर आयोजित यूथ महापंचायत के प्रतिभागियों के चयन हेतु जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन कन्या महाविद्यालय में किया गया। कार्यक्रम में खेल एवं युवा कल्याण विभाग की श्रीमती रुबिना देवान, नेहरू युवा केन्द्र के जिला युवा अधिकारी सौरव श्रीवास्तव, म.प्र. जनअभियान परिषद् जिला समन्वयक रत्नेश विजयवर्गीय, रासेयो जिला संगठक डॉ. एस.एस. मौर्य, प्राचार्य शा. कला एवं विज्ञान महावि. डॉ. संजय वाते, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. गोपालसिंह खराडी, डॉ. ललिता मरमट, प्रो. मुकेश इवेन, डॉ. अनामिका सारस्वत तथा डॉ. निलोफर खामोशी उपस्थित थे। यूथ महापंचायत में 15 से 29 वर्ष आयु के प्रतिभागी सम्मिलित हुए जिनके समूह बनाए गए। प्रतिभागियों के विचार रखने हेतु पर्यावरण के प्रति युवाओं की जिम्मेदारी, उद्यमिता व स्वरोजगार में बढते अवसर, मेरा एम.पी. मेरा गौरव, खेलों में एम.पी. के लिए अपार संभावनाएं, समाज निर्माण में अग्रसर युवा, लोकतंत्र में युवाओं की निर्णायक भागीदारी आदि विषयों पर प्रतिभागियों ने विषय से संबंधित विचार रखे गए। निर्णायकों द्वारा उनका चयन भी किया गया।

एआईएमआईएम ने म.प्र. में खोला खाता

माही की गूंज, खरगोन।

मध्य प्रदेश के खरगोन में अधिकतर सीटों पर भारतीय जनता पार्टी ने परचम लहराया है। यहां खरगोन नगर पालिका, करही पाडल्या नगर परिषद, बडवाह नगर पालिका परिषद, बडवाह नगर पालिका परिषद, बिस्टान नगर परिषद में भाजपा ने जीत हासिल की है तो सनावद नगर पालिका परिषद और कसरावद नगर परिषद में कांग्रेस ने जीत हासिल की है। खरगोन जिले से ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के लिए भी खुशखबरी आई है। असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ने यहां 3 वार्ड में जीत हासिल की है।

खरगोन नगर पालिका में जहां भाजपा ने अधिकतर वार्ड में जीत हासिल की है। तो यहां कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। कांग्रेस जहां महज 4 वार्ड में जीत हासिल कर पाई तो निर्दलीय 7 वार्ड में जीत हासिल करने में कामयाब रहे। ओवैसी की पार्टी ने यहां 3 वार्ड में जीत हासिल करते हुए अपनी दस्तक दी है। खरगोन के वार्ड नंबर 2 से अरुणा श्याम उपाध्याय ने जीत हासिल की है तो वार्ड नंबर 15 से शकील खान और वार्ड नंबर 27 से शबनम अदीब को जीत मिली है। निमाड़ क्षेत्र में एआईएमआईएम का प्रभाव बढ़ता दिख रहा है।

कसरावद नगर परिषद के 15 वार्डों में कांग्रेस 10, भाजपा 4 व एक प्रत्याशी निर्दलीय विजय हुआ।

करही पाडल्या नगर परिषद वार्ड 15 वार्डों में भाजपा 8 व कांग्रेस 7 पर विजयी रही।

बडवाह नगर पालिका परिषद के 18 वार्डों में भाजपा 9, कांग्रेस 4 व 5 निर्दलीय विजयी रहे।

सनावद नगर पालिका परिषद के 18 वार्डों में कांग्रेस 11, 7 पर भाजपा विजयी हुई।

बिस्टान नगर परिषद के 15 वार्डों में भाजपा 7, कांग्रेस 6 व 2 पर निर्दलीय प्रत्याशी विजयी रहे।

भाजपा का किला नहीं भेद पाए मयंक जाट, महापौर पद पर भाजपा का कब्जा बरकरार जीते पटेल

जाट की तुलना अभिमन्यु से कर बढ़ाया कांग्रेसियो ने मनोबल

आपराधिक छवि को ढाल बनाकर भाजपा ने की थी वापसी

माही की गूंज, रतलाम।

एक कहावत हैं ÷कौंन कहता है आसमान में छेद नही होता एक पथत्तर तो तबियत से उझाल कर देख÷ पूरी कहावत रतलाम नगर निगम के महापौर के लिए सम्पन्न हुए चुनावो पर फिट बैठती हैं। भाजपा के सबसे ज्यादा वर्चस्व की बात आती है तो पूरे प्रदेश में इंदौर के बाद रतलाम का ही नाम आता है। जहाँ महापौर से लेकर सांसद, विधायक तक भाजपा के निशान पर या तो जीत जाते हैं या फिर भारी बढ़त हासिल कर लेते हैं। स्थानीय चुनावो के परिणाम का अंतर भी इतना ज्यादा होता है कि, मुख्य प्रतिद्वंद्वी तक आस पास नही फटकता है।

ऐसे रतलाम में महापौर के चुनाव एक मिसाल बन कर रह गए। महापौर पद के लिए कांग्रेस की टिकिट पर चुनाव लड़ने वाले मयंक जाट जो भाजपा के इस किले को फतह तो नही कर पाएं लेकिन एक लड़ाके की तरह बता दिया कि भाजपा का कोई किला अभेद नही है। कांग्रेस प्रत्याशी मयंक जाट को 8 से 9 हजार से अधिक मतो से हार का सामना करना पड़ा लेकिन इस अंतर को कांग्रेस और जाट की जीत मानी जा रही है। इस हार के बाद मयंक जाट को महाभारत के अभिमन्यु कहा जा रहा है जो भाजपा का चक्रव्यू तोड़ तो नही सका है लेकिन उसे छितर बितर कर सोचने पर मजबूर कर दिया है।

आपराधिक छवि को ढाल बनाकर भाजपा ने की थी वापसी

भाजपा इस बार के चुनाव में मंयक जाट के मैदान में उतरने के बाद से बैकफुट पर आ गई थी न केवल नगर में बल्कि पूरे मध्यप्रदेश में रतलाम में जाट के जितने के चर्चे थे। अंदाज़ा इस बाद से ही लगाया जा सकता है कि जाट के माहौल को देखते हुए खुद सीएम को रोड शो ओर सभा करनी पड़ी। जाट की लगातार कैम्पेनिग से घबराए भाजपा प्रत्यासी प्रहलाद पटेल सहित कई भाजपा नेता अपना आपा खोकर अमर्यादित भाषा और विवाद तक उतर आये। यहां भाजपा की टिकिट को लेकर भी चर्चा शुरू हो चली थी। पहली बार रतलाम विधायक चेतन कश्यप की प्रतिष्ठा पर बन आई और रतलाम महापौर पद उन्ही के लिए चुनोती बन गया। चुनाव प्रचार शुरू होने से दो दिन पहले तक मंयक जाट का जलवा बरकरार था। ऐसे में भाजपा ने दाव खेलते हुए चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस प्रत्याशी मयंक जाट के आपराधिक रिकॉर्ड को वाइरल किया गया। जिसके बाद से बड़ा परिवर्तन हुआ। जिसके परिणाम स्वरूप कांग्रेस ओर जाट को संभलने का मौका नही मिला। कई वार्डों में कांग्रेस प्रत्याशियों को उतना समर्थन नही मिला जितना जाट को मिलना था और अतः परिणाम फिर से एक बार भाजपा और प्रहलाद पटेल के पक्ष में आए।

मयंक जाट।

प्रहलाद पटेल।

रतलाम नगर निगम में महापौर भाजपा का तथा 49 वार्डों में से 30 वार्ड भाजपा, 15 वार्डों कांग्रेस 4 वार्ड में निर्दलीय प्रत्याशी विजय हुए

महापौर पद पर भाजपा के प्रहलाद पटेल के विजय होंने के साथ साथ एक बार फिर नगर निगम पर भाजपा का कब्जा रहा और शहर के 49 वार्डो में से 30 वार्ड भाजपा, 15 वार्डों कांग्रेस 04 वार्ड में निर्दलीय प्रत्याशी विजय हुए।

वार्ड क्रमांक 1 से भावना हितेश पेमाल कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 2 से कविता सुनील महावर कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 3 से धीरज कुंवर किशोर सिंह राठौर भाजपा, वार्ड क्रमांक 4 से देवकन्या मीणा निर्दलीय, वार्ड क्रमांक 5 से भगत सिंह भदोरिया भाजपा, वार्ड क्रमांक 6 से शक्ति सिंह(रत्नदिप सिंह)राठौर भाजपा, वार्ड क्रमांक 7 से देवश्री मयूर पुरोहित भाजपा, वार्ड क्रमांक 8 से पप्पू पुरोहित भाजपा, वार्ड क्रमांक 9 से निशा पवन सोमानी भाजपा, वार्ड क्रमांक 10 अनीता जयेश वसावा भाजपा, वार्ड क्रमांक 11 से बलराम भट्ट निर्दलीय, वार्ड क्रमांक 12 से मनीषा मनोज शर्मा भाजपा, वार्ड क्रमांक 13 से आशा राजीव रावत कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 14 से मनीषा व्यास कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 15 से फखरुद्दीन मंसूरी कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 16 से रणजीत टाक भाजपा, वार्ड क्रमांक 17 से अनिता कटारा भाजपा, वार्ड क्रमांक 18 से राजू मनोहर लाल सोनी भाजपा, वार्ड क्रमांक 19 से कविता रोहित चौहान भाजपा, वार्ड क्रमांक 20 संगीता कृष्णा सोनी भाजपा, वार्ड क्रमांक 21 से केसरबाई भानीगामा कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 22 से विशाल शर्मा भाजपा वार्ड क्रमांक 23 अक्षय संघवी भाजपा, वार्ड क्रमांक 24 सलीम मोहम्मद बागवान कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 25 आयुषी जलज सांखला भाजपा, वार्ड क्रमांक 26 उमा रामचंद्र डोई निर्दलीय, वार्ड क्रमांक 27 यासमीन शेरानी कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 28 माया कपील पांचाल भाजपा, वार्ड क्रमांक 29 परमानंद योगी पण्डित भाजपा, वार्ड क्रमांक 30 शबाना खान (निर्विरोध) भाजपा, वार्ड क्रमांक 31 अशोक जोनवाल भाजपा, वार्ड क्रमांक 32 रामू डाबी भाजपा, वार्ड क्रमांक 33 मनीषा विजय चौहान कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 34 योगेश पापटवाल भाजपा, वार्ड क्रमांक 35 नीलोफर खान कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 36 स्मिता राजेश माहेश्वरी भाजपा, वार्ड क्रमांक 37 वसीम अली निर्दलीय, वार्ड क्रमांक 38 वहीद भाई शैरानी कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 39 हिना उत्सव मेहता बीजेपी, वार्ड क्रमांक 40 धर्मेंद्र व्यास भाजपा, वार्ड क्रमांक 41 दिलीप कुमार गांधी भाजपा, वार्ड क्रमांक 42 हितेश कामरेड भाजपा, वार्ड क्रमांक 43 प्रीति संजय कसेरा भाजपा, वार्ड क्रमांक 44 मीनाक्षी सेन कांग्रेस,

वार्ड क्रमांक 45 धर्मेंद्र रांका भाजपा, वार्ड क्रमांक 46 कमरुद्दीन कचवाय कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 47 मोहम्मद नासिर कुरेशी कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 48 शांतिलाल वर्मा कांग्रेस, वार्ड क्रमांक 49 सपना गौरव त्रिपाठी भाजपा से विजय हुए हैं। सूची सूत्रों से प्राप्त है इसमें परिवर्तन सम्भव है।

जाको राखे साइयां मार सके न कोई.....

मकान में परिवार मौजूद ओर गिर गया मकान, बाल-बाल बच्चा परिवार

माही की गूंज, रतलाम।

'जाको राखे साइयां मार सके न कोई' ये कहावत आपने सुनी कि ही होगी, ऐसा ही एक नजारा आपको बताने बताने जा रहे है। रिमझिम-रिमझिम बारिश शुरू होते ही कई कच्चे मकान गिर जाते है। ऐसा ही एक बारिश में मकान गिर गया, जिसमे परिवार के सदस्य मौजूद थे पर उनको कोई आंच नही आई, वही बड़ा हादसा होते हुए टला है। जिससे कोई जनहानि नहीं हुई।

मामला है, पिपलोदा तहसील के गांव बछोड़िया का, गांव में लगातार हो रही रिमझिम बारिश के चलते एक मकान धराशाई हो गया। मकान का छत पर जब घर के अंदर गिरा तब पूरा परिवार घर में ही मोजुद था और उनका बेटा सावन सोमवार पर घर सुबह ही खाटू श्याम भगवान के दर्शन करने निकला। वही ग्रामीणों की मदद से घर में रखा सारा सामान बाहर निकाला गया ओर तत्काल जिला पंचायत सदस्य राजेश भरावा व जनपत पंचायत सदस्य बद्री बाई बालाराम पटेल मौके पर पहुचकर मौका देखा और जिम्मेदार अधिकारीयो को अवगत कराकर शासन की ओर से मिलने वाली सहायता दिलाने की बात कही। मकान गिरने की जानकारी पटवारी को करने के बाद भी पंचनामा बनाने मौके पर नही पहुचे।

मामले में कन्हैया लाल पटवारी का कहना है कि, मैं मौके पर नहीं पहुंचा पर मेरे द्वारा जानकारी ऑनलाइन सबमिट कर दी गई है और तहसीलदार मैडम को भी इस मामले से अवगत करा दिया गया। जल्दी इनकी मुआवजा राशि परिवार को दिलाई जाएगी।

वही राजेश भरावा जिला पंचायत सदस्य ने बताया, मैं गांव में पहुंचा और मुझे जानकारी मिली की मानसिह जो कि गरीब परिवार है उनका मकान बारिश से गिर गया है। तो मैं तुरंत परिवार से मिलने पहुंचा और उनको बताया कि शासन की ओर से जो मुआवजा राशि है वह दिलाई जाएगी। मेने तत्काल मौके से ही तहसीलदार मैडम को अवगत करा दिया गया है। वही परिवार को रहने के लिए जिम्मेदार अधिकारी ध्यान देते हैं तो ठीक नहीं तो मैं परिवार को मेरे घर जावरा लेकर शिफ्ट करूंगा।

जिला जेल में बंदियों के बीच मनाया आनंद अल्पविराम कार्यक्रम

माही की गूंज, खरगोन।

आनंद विभाग द्वारा बुधवार को आयोजित जिला जेल मे बंदियो के बीच आनंद अल्पविराम कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम के दौरान डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम लीडर केबी मंसारे ने आनंद अल्पविराम, शांत समय (मौन) से सकारात्मक दिशा मे तनाव मुक्त होकर खुशहाल जीवन जीने का माध्यम है। बंदियों के जीवन मे बदलाव लाने एक आदर्श नागरिक के रूप मे प्रशिक्षित होकर यहां से जाए।

अपने घर, गावं में लोगों के जीवन में आनंद खुशी की गतिविधियों को साझा करे। मास्टर टैनर ने स्वयं के जीवन की घटनाएं साझा की गई। अहं, नफरत, लालच, क्रोध, बुराई, बदले के भाव, भ्रष्टाचार ये हमारे शरीर में मौजूद है, जिन्हें निकाला जा सकता है। धीरे धीरे इनसे मुक्त होते है तो जीवन का आनंद बढता है।

दुनिया के नीदरलैंड, फिनलैंड, ग्रीनलैंड, भूटान जैसे देश जो आनंद और खुशहाल जीवन जीने वाले देशों में प्रथम टॉप टेन देशों की श्रेणी में है। हमारा प्रदेश भी देश का पहला राज्य है जो नागरिकों के जीवन में आनंद खुशी की गतिविधियों के पहचाना जाता है। इन देशों में अपराध मात्र दो प्रतिशत है जिससे कि इन देशों मे जेले नहीं है।

हम आप सभी मिलकर आनंद अल्पविराम के माध्यम से अपराध मुक्त प्रदेश बना सकते है। हमारी आवश्यकताएं सीमित या कम करके खुशहाल रह सकते है। शांत समय का प्रयोग मनोरंजक गतिविधियों से बंदियों ने खुब ठहाके लगाए और संकल्प लिया की घर परिवार के साथ बेहतर जीवन जीना चाहते है।

जिला जेल अधीक्षक जेआर मंडलोई, उप जैलर लवसिह काटिया, युवराज सिंह मुवैल, कास्टेबल रामपाल देपाले, सुरेंद्र गाडगे, रमेश चक्रवर्ती उपस्थित रहे।

भाजपा गुटबाजी के चलते जावरा में हुई धराशाई

कांग्रेस ने जीती 16 सीटे, किया नगर पालिका पर कब्जा

- पिपलोदा

माही की गूंज, रतलाम/जावरा।

जावरा नगर पालिका चुनाव के लिए हुई मतगणना के बाद जावरा नगर पालिका में कांग्रेस को बहुमत मिल गया है। कांग्रेस ने बहुमत के लिए जरूरी 16 सीटें जीत ली हैं। वहीं भाजपा का आंकड़ा 9 सीटों पर ही रुक गया है। 5 सीटें निर्दलियों के खाते में आई हैं। निर्दलीयों के प्रदर्शन ने सबको चौकाया हे, 05 वार्डो पर कब्ज़ा करने के बाद करीब 05 वार्डो में दूसरे नंबर पर रहे हे। वार्ड 4 में कांग्रेस की सईदा बी ने भाजपा को 998 वोटों से हराया है। वहीं वार्ड 9 में निर्दलीय जानी बाई ने कांग्रेस को 8 वोटों को अंतर से हराया है।

मतदाताओं ने पार्टी नहीं उम्मीदवार पर लगाया

जिस तरह के परिणाम नगर में आए हे इससे अंदाज़ लगाया जा सकता हे की कांग्रेस और बीजेपी दोनों पार्टियों के टिकट वितरण से नाराज़ पार्टी कार्यकर्ताओ ने निर्दलीय चुनाव लड़ा वही मतदाताओं में भी दोनों पार्टियों के इस फैसले से नाराज़गी देखी गई उन्होंने जम कर निर्दलीयों को वोट किया। जिस तरह से नगर में कई वार्डो में उलटफेर देखने को मिला है, उससे ये अंदाज़ लगाना आसान हो गया हे, की इस बार निकाय चुनाव में मतदाताओं ने पार्टी सिम्बोल को छोड़क उम्मीदवार की छवि पर जयादा फोकस किया।

पिपलौदा में श्यामबिहारी पर दोबारा जताया विश्वास

नगर परिषद के चुनाव परिणाम घोषित होते ही पिपलौदा में एक बार फिर से निर्दलीय श्यामबिहारी पटेल पैनल ने बाजी मार ली है। दोनों राष्ट्रीय पार्टियों को पीछे छोड़ते हुए उन्होंने नगर परिषद पर कब्जा जमा लिया है। नगर परिषद में भाजपा 5 सीट पर जबकि कांग्रेस मात्र 1 सीट पर सिमट गई है। मतगणना पूरी होते ही पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष श्यामबिहारी पटेल की धर्मपत्नी ने भी हार पहनाकर उनका स्वागत किया और भव्य जुलूस निकाला गया। पिपलोदा में 9 निर्दलीय तो 5 पर भाजपा और 1 पर कांग्रेस ने मारी बाजी। यहां मतगणना का समय 9 बजे का था, परंतु तहसीलदार व रिटर्निंग अधिकारी अश्विनी गोहिया ही चुनाव परिणाम के दिन 8:50 पर आई। सभी लोग इंतजार कर रहे थे 9.05 पर लोगों को प्रवेश दिया गया। 9.20 से मतगणना प्रारंभ हुई। तहसीलदार के देरी से आने की वजह से मतगणना भी देरी से शुरु हुई।

- जावरा

एसडीएम किया विभिन्न शालाओं का निरीक्षण

माही की गूंज, बड़वानी।

एसडीएम राजपुर वीरसिंह चैहान द्वारा विकासखण्ड राजपुर की विभिन्न शालाओं का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान शालाओं से अनुपस्थित पाये गये शिक्षकों के विरूद्ध विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी राजपुर को अनुशासनात्मक कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान शालाओं में बच्चों का पढ़ाई का स्तर भी जांचा गया। विद्यार्थियों से पहाड़े पूछे गए एवं पुस्तक पढ़वाई गई। साथ ही यह भी देखा गया कि मीनू अनुसार मध्यान्ह दिया जा रहा या नहीं इस बारे बच्चों से चर्चा की गई । पुस्तक वितरण, गणवेश वितरण की जानकारी भी ली गई। एसडीएम राजपुर श्री चैहान ने हाई स्कूल इन्द्रपुर, माध्यमिक विद्यालय इन्द्रपुर प्राथमिक विद्यालय इन्द्रपुर का आकस्मिक निरीक्षण किया गया प्रातः 10.30 बजे किया गया। इस दौरान प्राथमिक शिक्षक श्रीमती पिंकी अवासे उपस्थित तो शेष शिक्षक मयाराम मुकाती माध्यमिक शिक्षक, प्रकाश मुजाल्दे माध्यमिक शिक्षक एवं अनिल खन्ना माध्यमिक शिक्षक अनुपस्थित पाए गए। वही माध्यमिक विद्यालय लिम्बई एवं प्राथमिक विद्यालय लिम्बई के निरीक्षण के दौरान शिक्षक उदयसिंह बमनका, श्रीमती यामिनी मिश्रा, श्रीमती सुनिता भगौरे अनुपस्थित पायी गई। इसी प्रकार शासकीय एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय राजपुर (नरावला) का निरीक्षण किया गया। परिसर में बन रहे आडिटोरियम हॉल का निर्माण कार्य देखा गया एवं क्वालिटी पूर्ण मटेरियल लगाने के निर्देश दिए गए। बच्चों से होस्टल की सुविधा एवं पढ़ाई के बारे में जानकारी ली गयी। प्राचार्य को विद्यालय परिसर में खाली जगह पर पौधे लगाने के निर्देश दिए गए एवं शेष रही बाउण्ड्री निर्माण का कार्य शीघ्र पूर्ण करने के भी निर्देश दिए गए। साथ ही लिम्बई की आंगनवाड़ी क्रमांक 1 एवं 2 का निरीक्षण किया गया। बच्चों को समय पर नाश्ता और भोजन मिलता है या नहीं बच्चों से जानकारी ली गई।

श्रावण मास में शिधेश्वर मंदिर में उमड़ा भक्तों का जनसैलाब

जिला पंचायत सदस्य और जनपत सदस्य ने लगाई थी भगवान से गुहार, हुई पूरी

माही की गूंज, रतलाम/पिपलोदा। श्रावण मास के पहले सोमवार को मध्यप्रदेश की चौथी स्थापित भगवान शिधेश्वर महाराज के दर्शन और जलाभिषेक करने के लिए गांव सहित आप पास के गांव के भक्तों का जनसैलाब उमड़ पड़ा। श्रावण मास के पहले सोमवार को शिधेश्वर महादेव मंदिर पर लाखों की संख्या में भक्तों द्वारा भगवान शिधेश्वर महाराज का जलाभिषेक किया गया। जावरा विधानसभा में स्थापित स्फटिक की शिवलिंग जिसके दर्शन करने कई राज्यो से आकर दर्शन कर रहे। वही खासकर हर सोमवार की शाम भगवान शिधेश्वर महाराज की महाआरती की जाती है ओर करीब गांव के हजारो भक्तों द्वारा महाआरती में अपनी मनोकामनाओं को पूरी करने के लिए आते है। वही जिला पंचायत सदस्य राजेश भरावा व पिपलोदा जनपत सदस्य बद्रीबाई बालाराम पटेल व सरपंच के दावेदार ने भी लगाई थी। भगवान से प्रार्थना कर अर्जी लगाई गई थी जो चुनाव परिणाम आते ही विजय होने पर भगवान को याद कर मन्दिर पहुचे ओर मन्दिर पर महाआरती को गई। वही भगवान शिधेश्वर महादेव मन्दिर पर हर सोमवार को हजारों की तादाद में भक्तों के साथ शाम को महाआरती की गई, ओर महाप्रसादी वितरण की जाती है। राजेश भरावा जिला पंचायत सदस्य ने बताया कि, मेने अपना नामांकन फार्म जमा करने के बाद मध्यप्रदेश की चौथी शिविर भगवान शिधेश्वर जी के दर्शन लाभ कर अभिषेक करके अर्जी लगाई गई थी जो भगवान ने मेरी अर्जी स्वीकार कर जीत दिलाई। मैं पुनः भगवान के दर्शन लाभ लेने मन्दिर आया हु, यहां पर सभी भक्तों की मांगी हुई मुरादे पूरी होती है। मैं सभी भक्तों से कहना चाहता हु की आप भी स्फटिक शिवलिंग भगवान शिधेश्वर जी के दर्शन लाभ लेकर अपनी अर्जी लगाई और अपनी मुरादे पूरी करे। बद्रीबाई बालाराम पटेल जनपत सदस्य पिपलोदा ने बताया कि, मेरे द्वारा भगवान सिद्धेश्वर को याद कर चुनाव लड़ने के लिए तैयार हुआ और भगवान से प्रार्थना कर विनती की और मुझे विश्वास था कि, भगवान मेरी मनोकामना पूरी करेंगे। जो मैंने भगवान से अर्जी लगाई थी वह मेरी प्रार्थना पूरी की गई वही सभी भक्त मध्य प्रदेश की 34

शिवलिंग दर्शन कर अपनी मनोकामना पूरी करें वही शिवरात्रि के प्रथम सोमवार को महाआरती में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लगभग 18 वर्षों के इंतजार के बाद भारी मतों से जीत का मिला प्रमाण पत्र

भाजपा के मंडल अध्यक्ष, पूर्व सरपंच सहित भील सेना के प्रदेशाध्यक्ष को हराया

माही की गूंज, आम्बुआ। मयंक विश्वकर्मा

त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था के तहत ग्राम सरकार के गठन हेतु हुए ग्राम पंचायत के चुनाव मे विगत 18-19 वर्ष से सरपंच पद पर काबिज होने की आस लगाए बैठे युवक को अन्ततः वर्ष 2022 में भारी मतों से जीत हासिल हुई। उन्होंने अपने सामने खड़े चार प्रत्याशियों को पराजित करते हुए विगत वर्षो के जीतके सारे रिकार्ड तोड़ दिए। जीत पर कांग्रेस नेताओ तथा कार्यकर्ताओं ने बढ़ाई प्रेषित कर मतदाताओं का आभार माना हैं।

एक जुलाई को आम्बुआ ग्राम पंचायत में संपन्न हुए चुनाव में सरपंच पद पर विगत 18 वर्षो से काबिज होने का इंतजार कर रहे युवा कांग्रेसी कार्यकर्ता रमेश अजयसिंह रावत ने निकटतम प्रतिद्वंद्वी चार प्रत्याशियों को क्रमशः पूर्व सरपंच तथा भाजपा मंडल अध्यक्ष जुवानसिंह रावत, भील सेना प्रदेश अध्यक्ष रमेश बघेल, शिक्षक पद से सेवानिवृत प्रधान पाठक विक्रमसिंह रावत तथा आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था के पूर्व कर्मचारी करणसिंह रावत को पंचकोणीय मुकाबले में एक हजार 25 मतों से रिकॉर्ड जीत दर्ज कर विगत वर्षो में सरपंच पद विजई रहे। ग्राम पंचायत में कुल 2 हजार 733 मत पड़े, जिसमे रमेश रावत ने एक हजार 25 मतों से जीत हासिल की तथा जीत का प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

श्री रावत की जीत पर पूर्व मंत्री, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, पूर्व सांसद तथा वर्तमान में झाबुआ विधायक वरिष्ठ कांग्रेस नेता कांतिलाल भूरिया, अलिराजपुर विधायक मुकेश पटेल, पूर्व जिला अध्यक्ष महेश पटेल, युवक कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष विक्रांत भूरिया, कार्यवाहक जिला अध्यक्ष ओम सेठ राठौड़, पूर्व विधायक प्रतिनिधि अमान पठान, मुस्लिम पंच कमेटी सदर चांद मोहम्मद मकरानी, पूर्व उपसरपंच हुसेनी, हासिम अली, महेंद्रसिंह रावत, गजेंद्रसिंह रावत, हाबुसिंह, थानसिंह भयड़िया, मुस्तु बोहरा, सारिक खान, भूपेंद्र बघेल, लोकेंद्र, विक्रम, करमेन्द्र सिंह, जितेंद्र, आतिश, सुरता, प्रताप सिंह, जालमसिंह आदि ने जीत पर बधाई दी।

जुलूस निकालकर की आतिशबाजी

रमेश रावत को सर्वाधिक मत प्राप्त हुए मगर जीत का प्रमाण पत्र 15 जुलाई को प्रदान किया गया। प्रमाण पत्र मिलने के बाद उत्साही कार्यकर्ताओं ने कस्बे में डीजे की धुन पर नाचते हुए जुलूस निकाला व प्रांगण में आतिशबाजी कर जीत का जश्न मनाया गया। स्वागत समारोह आयोजित किया गया जिसमें सरपंच रमेश रावत का हार-मालाओं से स्वागत किया। स्वागत कार्यक्रम को महेश खंडेलवाल, हाशिम अली बोहरा, मुस्तू बोहरा, कालू भारती आदि ने संबोधित किया। स्वागत भाषण में रमेश रावत ने सभी मतदाताओं का आभार मानते हुए ग्राम पंचायत क्षेत्र का सतत् विकास कराने का संकल्प दोहराया। स्वागत कार्यक्रम के बाद सरपंच श्री रावत ने पंचायत भवन में फीता काट कर प्रवेश किया। उत्साही कार्यकर्ताओं ने उन्हें सरपंच की कुर्सी पर आसीन कराया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन अमान पठान ने किया तथा ग्राम पंचायत टेमाची के नवनिर्वाचित सरपंच जो की कार्यक्रम में उपस्थित नानसिंह कनेश ने उपस्थित अतिथियों, कार्यकर्ताओं, मतदाताओं का आभार माना।

पाक्सो एक्ट के तहत 4 प्रकरणों में आरोपियों को हुई सजा

अलीराजपुर।

एसपी मनोज कुमार सिंह के द्वारा सामुदायिक पुलिसिंग के तहत विगत 6 माहों से लगातार जन जागृति अभियान चलाया जा रहा है। जन जागृति अभियान के माध्यम से दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में आमजन के मध्य जाकर जिले में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, डाकनप्रथा एवं समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान हेतु ग्रामीण जनता को चौपाल एवं खाटला बैठक मे समझाईश दी जा रही है। जन जागृति अभियान के दौरान पुलिस अधीक्षक श्री सिंह ग्रामीणों से रूबरू होकर चर्चा करते हैं। इस दौरान काफी संख्या में महिला, पुरूष व बच्चे उपस्थित होते हैं। उपस्थित ग्रामीण पुलिस का आत्मीयता से सम्मान कर खुलकर बात करते हैं तथा इससे ग्रामीणजन का पुलिस के प्रति विश्वास भी बढा है।

जनजागृति अभियान से अलीराजपुर पुलिस को सार्थक परिणाम भी प्राप्त होनें लगे है। जिले में विगत 6 माहों में गतवर्ष 2021 की तुलना में आलौच्यवर्ष 2022 में पाक्सो एक्ट के तहत दर्ज होनें वाले अपराधों में 24.19 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई है। इसी प्रकार अलीराजपुर पुलिस के द्वारा महिलाओं/बच्चीयों पर दर्ज होनें वाले अपराधों के अनुसंधान/जांच में भी बहुत ही संवेदनशीलता एवं गंभीरता बरती जा रही है, जिससे की आरोपी को सजायाबी दिलवाई जा सके। अनुसंधान के स्तर को बेहतर बनानें के लिये भी विशेषज्ञों के माध्यम से अनुसंधान अधिकारियों के लिये लगातार प्रशिक्षण प्रोग्राम चलाये जा रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप ही माह जुलाई में पाक्सों एक्ट के तहत दर्ज 4 प्रकरणों में 5 आरोपियो को न्यायालय द्वारा सजा से दण्डित किया गया है। जिसमें थाना आम्बुआ के एक प्रकरण में आरोपी को आजीवन कारावास व एक हजार 500 रुपए के अर्थदण्ड, थाना सोरवा के एक प्रकरण में आरोपी को आजीवन कारावास व 5 हजार 500 रुपए के अर्थदण्ड, थाना बखतगढ के एक प्रकरण में 2 आरोपियों को 20-20 वर्ष का सश्रम कारावास व 10-10 रुपए के अर्थदण्ड एवं थाना आजादनगर के एक प्रकरण में आरोपी को आजीवन कारावास व 3 हजार रुपए के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया है।

पुलिस अधीक्षक श्री सिंह ने बताया कि, इस प्रकार की सामुदायिक पुलिसिंग लगातार जारी रखकर दुरस्थ गांवों में जाकर उनसे चर्चा कर जागरूकता का पुरा-पुरा प्रयास किया जायेगा। सभी थाना प्रभारी सप्ताह में दो बार जन जागृति अभियान की बैठक रखनें के लिए निर्देशित किया गया है। महिलाओं/बच्चीयों पर अपराध करने वाले किसी भी आरोपी तत्व को बख्शा नहीं जाएगा।

चोरी की चार वारदात को अंजाम देने वाला आरोपी पुलिस की गिरफ्त में

माही की गूंज, अलीराजपुर/नानपुर।

थाना नानपुर क्षेत्रान्तर्गत विगत 6 माह से लगातार चोरी की वारदातें हो रही थी। अज्ञात आरोपी के द्वारा चोरी की वारदात को अंजाम देकर पुलिस को लगातार चुनौती दी जा रही थी। इन लगातार हो रही चोरी की वारदात के अज्ञात आरोपी की धरपकड हेतु थाना प्रभारी नानपुर उप निरीक्षक भूपेन्द्र खरतिया के अधीनस?थ टीम का गठन किया गया था तथा घटना में गठित टीम के द्वारा की जा रही प्रत्येक कार्रवाई की प्रगति पर अनुविभागीय अधिकारी पुलिस जोबट नीरज नामदेव स्वयं निगाह रख रहे थे।

चोरी की घटनाओं की पतारसी हेतु गठित टीम के द्वारा अज्ञात आरोपी की धरपकड़ हेतु अनुविभागीय अधिकारी पुलिस जोबट नीरज नामदेव के पर्यवेक्षण में लगातार गंभीरता से प्रयास जारी थे, जिसके परिणामस्वरूप ही चोरी की घटना के संबंध में टीम के मुखबीर तंत्र से घटना के आरोपी के बारें में सूचना मिली। जिस पर आरोपी भुरू पिता रतन निवासी ग्राम सोलिया से नानपुर पुलिस टीम के द्वारा सख्ती से पूछताछ की गई, जिसके द्वारा चोरी की वारदातों को अंजाम देना स्वीकार किया गया। आरोपी भुरू से अलग-अलग 4 चोरी की वारदातों में चुराया गए चांदी के जेवरात कीमती 97 हजार 540 रुपए के बरामद करने में नानपुर पुलिस टीम को सफलता प्राप्त हुई।

उक्त कार्रवाई में थाना प्रभारी उप निरीक्षक भूपेन्द्र खरतिया एवं उनके अधीनस्थत थाना नानपुर पुलिस टीम का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

फीस व किराया देने के लिए छात्रों ने की चोरी

जबलपुर।

जिले में एक महिला से 40 हजार रुपए नकदी की लूट के मामले में पुलिस ने दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ के दौरान युवकों ने बताया कि, उन्होंने प्रतियोगी परीक्षा के लिए कोचिंग की फीस और मकान का किराया देने के लिए इस अपराध को अंजाम दिया।

गोसलपुर थाने के प्रभारी एचआर सिन्हा ने बताया कि, दोनों आरोपियों ने 13 जुलाई को बुढ़ाकर गांव में वारदात को अंजाम देने से पहले बैंक की रेकी की थी। उन्होंने कहा कि, घटना से पहले दंपती प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अपने खाते में जमा 40 हजार रुपए बैंक से निकालकर बाहर फल विक्रेता के पास खड़े थे, उसी दौरान आरोपी बाइक से आए और महिला से नकदी भरा उसका बैग छीन लिया।

मकान का किराया और फीस देने के लिए की लूट

अधिकारी ने कहा कि, पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की सहायता से शुभम उर्फ अर्पण (19) और अभिषेक शुक्ला उर्फ बच्ची (18) को गिरफ्तार कर लिया। दोनों रीवा जिले के मिसिरिहा गांव के रहने वाले हैं। पूछताछ में अर्पण ने पुलिस को बताया कि, उसके परिवार को आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और उसके पास जबलपुर में उसकी प्रतियोगी परीक्षा की कोचिंग की फीस और मकान का किराया देने के लिए पैसे नहीं हैं।

दोनों को भेजा गया जेल

सिन्हा ने कहा कि, अर्पण का दोस्त अभिषेक भी प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में प्रतियोगी परीक्षा की कोचिंग ले रहा है और वह भी आर्थिक परेशानी का सामना कर रहा था। सिन्हा ने कहा कि, अर्पण ने पुलिस को बताया कि पैसे के लिए किसी को लूटना अभिषेक का विचार था। दोनों ने कई दिनों तक बैंकों की रेकी की और 40 हजार रुपये निकालने वाले दंपती का पता लगाया। अधिकारी ने बताया कि स्थानीय अदालत ने मंगलवार को दोनों को जेल भेज दिया।

नगर निकाय में भाजपा की प्रचंड जीत

माही की गुंज, शुजालपुर। नगर निकाय शुजालपुर चुनाव में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। 25 वार्डो में से 17 पर भाजपा का दबदबा रहा तो वही कांग्रेश 4 वार्ड पर ही सिमट गई और चार निर्दलीय प्रत्याशियों को भी जनता का सहयोग मिला। शाजापुर जिले में नगरी निकाय के दूसरे चरण की मतगणना में शुजालपुर नगर पालिका परिषद, अकोदिया नगर परिषद, पोलाय कला नगर परिषद और पान खेड़ी कालापीपल नगर परिषद की मतगणना हुई। यहां पर काफी रोचक और टक्कर का मुकाबला दिखाई दिया। मतगणना पूरी होने के बाद विजय जुलूस निकलना शुरू हो चुके थे। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल देखा गया। भाजपा व कांग्रेस के पार्षद जुलूस निकाल कर जनता का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं।

शुजालपुर नगर परिषद के 25 वार्ड में से 17 पर भाजपा, 4 पर कांग्रेस व 4 वार्ड में निर्दलीय उम्मीदवार ने जीत दर्ज की।

पानखेडी (कालापीपल) नगर परिषद के 15 वार्ड में से 8 पर भाजपा, 6 पर कांग्रेस व एक वार्ड में निंदलीय उम्मीदवार ने जीत दर्ज की।

पोलायकलां नगर परिषद के 15 वार्ड में से 6 पर भाजपा, 6 पर कांग्रेस व 3 वार्ड में निर्दलीय उम्मीदवार ने जीत दर्ज की।

अकोदिया नगर परिषद के 15 वार्डो में से 8 पर भाजपा, 6 पर कांग्रेस व एक वार्ड में निंदलीय उम्मीदवार ने जीत दर्ज की।

पूर्व सैनिक सेवा परिषद कार्यकारिणी का हुआ गठन

माही की गूंज, शुजालपुर।

पूर्व सैनिक सेवा परिषद की वार्षिक मीटिंग का आयोजन जटाशंकर परिसर शुजालपुर में किया गया। पूर्व सैनिक सेवा परिषद पूरे जिले में एक एनजीओ की तरह कार्य करती है और सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है। अभी कुछ ही महीनों पहले शुजालपुर में संपन्न हुए 108 कुण्डी गायत्री यज्ञ की सुरक्षा की जिम्मेदारी, रक्त दान शिविरों की जिम्मेदारी हो, शुजालपुर की साफ़ सफ़ाई के प्रति जागरूकता अभियान मे हिस्सेदारी, एतिहासिक धरोहर की सुरक्षा वा स्वच्छता आदि सभी जगहों पर पूरी ईमानदारी से अपनी सहभागिता निभाती है। सेवा परिषद् इसके साथ साथ क्षेत्र के शहीद सैनिकों की अंतिम यात्रा वा शहीदों के परिवारों को उनके अधिकार दिलाती हैं। रिटायर सैनिकों की सम्मान रैली निकालती हैं।

शुजालपुर के जटाशंकर मंदिर परिसर में पूर्व सैनिक सेवा परिषद की वार्षिक मीटिंग के आयोजन में सेवानिवृत्त होकर आए ग्राम मितेरा के फौजी लक्ष्मण परमार का संस्था में नए सदस्य के रूप में स्वागत किया गया और साथ ही साथ नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें दुर्गा प्रसाद परमार को जिला अध्यक्ष व लखन सिंह परमार को जिला उपाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया। शुजालपुर कार्यकारिणी में आनंदी लाल पाटीदार को अध्यक्ष व धर्मेंद्र परमार को उपाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया। साथ ही साथ शुजालपुर कार्यकारिणी में दिनेश परमार कोषाध्यक्ष व राजेंद्र सिंह सिसोदिया को मीडिया प्रभारी का दायित्व सौंपा गया। मार्गदर्शक मंडल में दशरथ पुरी, केसर सिंह, लाल सिंह, शंकर सिंह, चतुर्भुज को सम्मिलित किया गया। सभी सदस्यों ने नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएं दी व आगे सुचारू रूप से कार्य करने के लिए हर मदद का आश्वासन दिया।

निकाय चुनाव में कांग्रेस के लिए खुशी के साथ गम

रीवा। रीवा के नगरीय निकाय चुनाव में जहां कांग्रेस के महापौर प्रत्यासी अजय मिश्रा जीत के करीब हैं और कई वार्डों में कांग्रेस के प्रत्यासियों ने जीत हासिल की है। वहीं कांग्रेस के दिग्गज नेता राजमणि पटेल के पुत्र सज्जन पटेल अपने वार्ड से भाजपा प्रत्यासी से 72 वोटों से चुनाव हार गए हैं।

मध्यप्रदेश के दिग्गज नेताओं में शुमार कांग्रेस के राज्यसभा सांसद के पुत्र अपने वार्ड से पार्षद का चुनाव हार गए हैं। सज्जन पटेल वार्ड 16 से चुनाव लड़े थे, लेकिन भाजपा प्रत्यासी शालिग्राम नापित से मुकाबले में उन्हें हार का सामना करना पड़ा है।

राजमणि पटेल कांग्रेस के जाने पहचाने चेहरे हैं कई बार विधायक और मंत्री भी रह चुके हैं। उनके पुत्र सज्जन पटेल वार्ड 11 से कांग्रेस से तीन बार पार्षद रह चुके हैं। लेकिन इस बार 11 वार्ड आरक्षित होने की वजह से वार्ड 16 से चुनाव लड़े थे जहां से उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा और वो भाजपा प्रत्यासी से 72 वोटों से चुनाव हार गए।

सज्जन पटेल लगातार अपने वार्ड से पार्षद पद का चुनाव जीतते रहे लेकिन वार्ड बदलते ही वो चुनाव हार गए। जहां एक ओर कांग्रेस ने महापौर पद जीत लिया तो कांग्रेस के बड़े नेता के बेटा का चुनाव हारना कांग्रेस के लिए झटका माना जा रहा है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता राजमणि पटेल पिछड़ों की राजनीति करते आए हैं। उन्हें प्रदेश के दिग्गज नेता पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय अर्जुन सिंह का काफी करीबी माना जाता था। निश्चित रूप से उनके बेटे की हार से कई सवाल उठेंगे।

पैसा लेकर वोट नहीं दिया तो मार दी गोली

मुरैना।

पंचायत चुनाव संपन्न होने के बाद रंजिश की घटनाएं सामने आने लगी हैं। पैसे लेकर वोट नहीं देने को लेकर दो पक्षों में विवाद हुआ और आरोपियों ने युवक की गोली मारकर हत्या कर दी। घटना सराय छोला थानां क्षेत्र के तिलोंदा गांव की है। गांव के लोग इस घटना को चुनावी रंजिश भी बता रहे हैं। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर उनकी गिरफ्तारी के लिए दबिश देना शुरू कर दिया है। सभी आरोपी फरार बताए गए हैं। सराय छौला थाना पुलिस ने आरोपियों पर दवाब बनाने के लिए उनके परिजनों को थाने में बैठा लिया है।

सरायछौला थाना क्षेत्र के तिलोंदा गांव निवासी मंजीत गुर्जर ने पंचायत चुनाव के दौरान गांव के 30 वर्षीय कृष्ण पुत्र राम नाथ सिंह गुर्जर को 50 हजार दिए थे। यह पैसे चुनाव में प्रत्याशी को वोट डालने के लिए दिए थे। कृष्णा ने पैसे लेने के बाद भी प्रत्याशी वोट नहीं डलवाए और वह हार गया। इसी को लेकर मंजीत सोमवार की देर शाम अपने रुपए मांगने के लिए कृष्णा के घर पर गया।

मंजीत के साथ हरीराम, दुष्यंत गुर्जर निवासी सदर, श्रीकृष्ण, सचिन निवासी पीपरखेड़ा भी गए हुए थे।मंजीत ने कृष्णा के घर पहुंचकर रुपयों की मांग करने के साथ साथ गाली-गलौच भी की। जब कृष्ण ने इसका विरोध किया तो आरोपियों ने एक राय होकर कृष्ण को घेरकर अवैध हथियारों से फायरिंग शुरू कर दी। फायरिंग के दौरान एक गोली कृष्णा के सिर को चीरती हुई निकल गई, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। कृष्ण के जमीन पर गिरते ही आरोपी मौके से भाग गए। ग्रामीणों ने इस घटना की सूचना सराय छौला थाना पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल के डेड हाउस भेज दिया। जहाँ आज मंगलवार को मृतक के शव का पोस्टमार्टम किया गया। पुलिस ने आरोपियों की तलाश की तो उनके घर पर ताले लटके हुए मिले। घटना के बाद गांव में तनाव की स्थित बनी हुई है। एहतियात के तौर पर गांव में पुलिसबल तैनात किया गया है।

पुलिस ने नामजद 5 आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी गिरफ्तारी के लिए दबिश देना शुरू कर दिया है। पुलिस ने आरोपियों पर दवाब बनाने के लिए उनके परिजनों को थाने में बैठा लिया है। इस घटना के पीछे चुनावी रंजिश भी बताई जा रही है।

शिवराज के 'घर' में खाता भी नहीं खोल पाई कांग्रेस

सीहोर। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के गृह क्षेत्र बुधनी में भारतीय जनता पार्टी ने प्रचंड जीत हासिल की है। बुधनी नगर परिषद में भाजपा ने जहां शिवराज ने नाम का मान रखा है, वहीं कांग्रेस खाता तक नहीं खोल पाई है। इसके अलावा कमलनाथ के गढ़ चौरई में भी कमल खिल गया है।

बुधनी नगर परिषद की 15 सीटों पर 13 सीटों पर भाजपा ने एकतरफा जीत हासिल की है। वहीं 2 सीट निर्दलीय प्रत्याशियों के खाते में गई हैं। बुधनी नगर परिषद में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली है। इसके अलावा बुधनी विधानसभा के अंतर्गत आने वाली रहटी नगर परिषद में कांग्रेस सिर्फ एक सीट जीत पाई है। वहीं यहां भाजपा को 15 में 12 सीटों पर जीत मिली है। इसके अलावा दो सीटें भाजपा के खाते में गई हैं।

कमलनाथ के गढ़ में भी खिला कमल

सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के गढ़ में भी कांग्रेस अपनी इज्जत नहीं बचा पाई है। चौरई नगर पालिका सीट को कांग्रेस से छीनते हुए भाजपा ने भगवा लहरा दिया है। चौरई की 15 सीटों में से 9 पर भाजपा ने जीत हासिल की है। वहीं कांग्रेस को सिर्फ छह सीटों पर ही जीत मिली है।

राजनीतिक हलचल...

क्षेत्र क्रमांक 14 की हार पड़ी भाजपा को भारी, 12 नम्बर से विधानसभा के लिए निकला युवा चेहरा

13 नम्बर को जीत के बाद भी उपाध्यक्ष पद एक मात्र सामान्य का बैठना हुआ मुश्किल

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

लगातार 28 वर्षो से जिला पंचायत में कांग्रेस का किला ढहाने के लिए पेटलावद विकास खण्ड जो कि भाजपा का मजबूत क्षेत्र माना जाता है, जहा से इस बार भाजपा को तीनों क्षेत्र जितने के आसार थे। लेकिन क्षेत्र क्रमांक 14 अपने ही प्रत्याशि नीलेश मीणा को समय पर जरूरी प्रचार नही दे पाने के और कांग्रेस विधायक द्वारा लगातार भाजपाई वोटो में तोड़-फोड़ की जानकारी के बाद भी इसकी भरपाई नही करने के कारण यहां भाजपा को 737 मतों की मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा। और अब यही हार भाजपा के लिए मुसीबत बन गई है। जिले से सभी परिणाम आने के बाद स्थिति भाजपा-कांग्रेस 6-6 से बराबर रही। एक निर्दलीय और एक जयस प्रत्याशी की जीत हुई। अब कांग्रेस से जिला पंचायत छीनने का लिए एक निर्दलीय ओर एक जयस के सदस्य को अपनी ओर लाना होगा। क्षेत्र क्रमांक 14 में नीलेश मीणा की जीत लगभग तय थी क्योकि कांग्रेस और कांग्रेस के बागी इस क्षेत्र से मैदान में थे। पूर्व विधायक निर्मला भूरिया प्रभारी और पूर्व महामंत्री हेमंत भट्ट सह प्रभारी बनाए गए थे जो चुनाव के पूरे समय क्षेत्र से नदारत रहे।

भाजपा नेता नीलेश मीणा ने बताया कि, चुनाव के दौरान उनको पार्टी से कोई सहयोग नही मिला। यहां तक की प्रभारी ओर सहप्रभारी तक क्षेत्र में कोई बैठक नही कर सके। जिले से किसी नेता का इस क्षेत्र में दौरा नही रहा। जबकि बाकी दो क्षेत्र में जिलाध्यक्ष ओर सांसद घूमते रहे। मीणा ने बताया कि, अपने बेटे को चुनाव जीताने के लिए विधायक मैडा ने क्षेत्र में लगभग 15 टैंकरों का वितरण चुनाव दौरान किया। जिसकी सूचना जिलाध्यक्ष लक्ष्मण नायक ओर प्रभारी निर्मला भूरिया को भी दी थी। जिसको 'देखते है' बोल कर टाल दिया गया। भाजपा संगठन और नेताओं की क्षेत्र में अनदेखी के कारण मामुली अंतर से मुझे नही भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक 14 की कमान पूरी तरीके के जिला उपाध्यक्ष दुर्गादास मोटापाला के पास थी। जिसने चुनाव में भाजपा समर्थित निलेश मीणा के लिए जी-जान से मेहनत की और चुनाव खुद चुनाव लड़ रहे हैं। उस स्थिति में प्रचार कर भाजपा की जीत दिलाने की कोशिश की लेकिन वो हार जीत के 700 मतों के अंतर को नही पाट पाए। क्षेत्र क्रमांक 14 की हार का कारण भाजपा और कांग्रेस की साठ-गांठ होना बताया जा रहा है। क्योंकि सांसद की साख 13 नम्बर पर लगी थी, जहा किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप कांग्रेस विधायक नही करे इसलिए भाजपा ने 14 नम्बर क्षेत्र में अपने कदम पीछे खींच लिए।

बम्पर वोटो से जीत के बाद जिला पंचायत अध्यक्ष और युवा विधायक की मांग पर खरे उतरते अजमेर सिंह भूरिया

बात करे पूरे जिले की जिला पंचायत के क्षेत्रो की तो सबसे बड़ी जीत और रिकॉर्ड जीत पेटलावद विकास खंण्ड के क्षेत्र क्रमांक 12 से मिली। जहा पूर्व विधायक वीरसिंह भूरिया और पूर्व जिला पंचायत सदस्य अजमेर अनु भूरिया मैदान थी। यहां बिना तैयारी के पार्टी ने अचानक अजमेर भूरिया को इस क्षेत्र से चुनाव लड़ने का बोल दिया, जो खुद जनपद सदस्य का चुनाव लड़ना चाहते थे। लेकिन अजमेर भूरिया ने अपनी पत्नी को मैदान में उतार कर यहां से लगभग 11 हजार मतों से चुनाव जितवाया। ये आंकड़ा पेटलावद विधानसभा सीट के पिछले तीन चुनाव परिणाम से भी अधिक है। जिला पंचायत अध्यक्ष की सीट महिला के लिए आरक्षित होने से अजमेर भूरिया की पत्नी इसके लिए सबसे मुख्य देवेदार है। वही जयस जैसे संगठन के मैदान में उतरने के बाद से क्षेत्र में अब युवा विधायक की मांग बढ़ रही है। अजमेर सिंह भूरिया के परिवार का राजनीतिक वर्चस्व भी रहा है और एक बार इस विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने का अनुभव होने के कारण भविष्य में पेटलावद विधानसभा से पार्टी इनको मौका दे सकती है।

सामान्य सीट से जीत के बाद भी उपाध्यक्ष पद की दावेदारी पर फिर सकता है पानी

जिला पंचायत की उपाध्यक्ष सीट पर सामान्य सीट से जीते सदस्य का ही कब्जा रहा है। जिले की एक मात्र अनारक्षित सीट क्षेत्र क्रमांक 13 भी पेटलावद विकास खण्ड में पड़ती है। चुनाव की शुरुआत में ही कहा जा रहा था कि यहां जिला पंचायत सदस्य का नही उपाध्यक्ष का चुनाव हो रहा है। क्षेत्र क्रमांक 13 से जीत कर उपाध्यक्ष बनने का खूवाब सजाए बैठे जिला महामंत्री पहले तो उक्त क्षेत्र महिला आरक्षित होने के कारण खुद मैदान में नही उतर सके और पत्नी ललिता कुंवर को मैदान में उतारना पड़ा। यहां से बड़ी मशक्त के बाद कांग्रेस और जयस की चुनोती से पार पाकर जीत मिली। लेकिन जिला पंचायत बैठाने के लिए जरूरी 8 सदस्यों की जीत के आंकड़े से दो सीट दूर रह गई। अब स्थिति जो निर्मित हो रही है उसके हिसाब से जीते हुए दो अन्य सदस्यों को उपाध्यक्ष बनाने की पेशकश दोनों दलों की और से की जा रही है। ऐसे में इस बार भाजपा की पैनल बैठने की स्थिति में उपाध्यक्ष पद क्षेत्र क्रमांक से जीती भाजपा की ललिता कुंवर के हाथ से जा सकता है।

दूसरा, एक कारण ये भी सामने आ रहा है कि यही भाजपा पेटलावद विकास खण्ड से अपनी और से यहां पेटलावद विधानसभा से यदी जिला पंचायत अध्यक्ष को अधिकृत किया जाता है, तो फिर उपाध्यक्ष के लिए यहां से चाह कर भी इस क्षेत्र उपाध्यक्ष अधिकृत नही कर पाएगी। हालांकि सांसद डामोर अपना पेटलावद विधानसभा में भविष्य देख रहे हैं। जिसके चलते खास माने जाने वाले जिला महामंत्री की पत्नी को उपाध्यक्ष बनाने की पूरी कोशिश करेंगे। जिससे भविष्य में विधानसभा में इनकी टीम खड़ी हो सके।

जनपद में भी रोज बदल रहे समीकरण

जिले में जिला पंचायत के साथ-साथ जनपद पंचायत पेटलावद के भी समीकरण रोज बदल रहे हैं। अध्यक्ष पद की दावेदारी के साथ ही मैदान में उतरे अन्नतखेड़ी क्षेत्र क्रमांक 24 से जीते रमेश सोलंकी बिना पार्टी के अधिकृत हुए है जो कई जनपद सदस्यों के साथ गायब है। तो वही कमजोर दावा करने वाली कांग्रेस भी अब मजबूती से दावेदारी कर मैदान में है। यहां नारायण ताड क्षेत्र क्रमांक 25 से जीते हैं और लगभग कांग्रेस की ओर से अधिकृत होना तय है। जयस संगठन का दावा भले ही परिणाम आने के बाद कमजोर हुआ है लेकिन कांग्रेस के लिए किंग मेकर की भूमिका में आ सकती है। भाजपा की ओर से रमेश सोलंकी के साथ-साथ रायपुरिया क्षेत्र के मंडल अध्यक्ष शांति लाल मुणिया भी दावेदारी कर रहे हैं और उपाध्यक्ष की चाह में कुछ सदस्यों की सहमति भी इनके साथ है।

सबसे बड़ा पेच भी उपाध्यक्ष को लेकर फसा हुआ है। भाजपा की ओर इस पद पर एक अनार और तीन बीमार की स्थिति बनी हुई है। अनाराक्षित सीट से जीते 4 में 3 सदस्य भाजपा की और से उपाध्यक्ष का बनने का दावा कर रहे हैं। वही कांग्रेस के खेमे में एक भी सामान्य वर्ग का सदस्य जीता हुआ नही होने से कांग्रेस की ओर से भाजपा से जुड़े जीते सदस्यों को उपाध्यक्ष बनाए जाने के प्रलोभन दिए जा रहे हैं। जिला पंचायत के साथ-साथ जनपद को लेकर भी अब दोनों दलों की जोड़-तोड़ जारी है।

28 वर्षों बाद पंचायत पर भाजपा हुई काबीज

माही की गूंज, काकनवानी। नरेश पंचाल

पिछले 28 वर्षों से ग्राम पंचायत काकनवानी पर कांग्रेस ने अपने पैर पसार रखे थे। जिसे इस त्रिकोणीय पंचायत चुनाव में भाजपा अधिकृत प्रत्याशी सांता पति बाबू निनामा ने भारी बहुमत से जीत हासिल की और कांग्रेस प्रत्याशी को हार का सामना करना पड़ा।

आपको बता दें कि, पिछले 45 वर्षों से ग्राम पंचायत पर कांग्रेस का ही कब्जा रहा है। जिस पर 28 वर्षों से गेंदाल डामोर ने अपने पैर जमा रखे थे। लेकिन इस त्रिकोणीय पंचायत चुनाव में जिले से लगाकर जनपद, ग्राम पंचायत एवं पंच तक गेंदाल डामोर ने अपने ही पूरे परिवार को मैदान में उतार रखा था। जिस कारण ग्राम पंचायत में बुरी तरह हार का सामना करना पड़ा।

शपथ के पूर्व किया ग्राम पंचायत का शुद्धिकरण

प्रशासन द्वारा सांता बाबू निनामा को विजेता घोषित कर प्रमाण पत्र देने के बाद सरपंच सांता बाबू निनामा ने पंचायत में श्री सत्यनारायण भगवान की व्रतकथा, सुंदरकांड एवं गायत्री हवन करवा कर पंचायत की शुद्धिकरण की गई। पलवाड क्षेत्र में आधे से अधिक ग्राम पंचायतों पर भाजपा ने अपना परचम लहराया है।

भगवान भरोसे ग्रामीण स्तर की शिक्षा व्यवस्था....

शिक्षक और अतिथि शिक्षक दोनों गायब, खाना बनाने वाली बाई कर रही छुट्टी

माही की गूंज, बामनिया।

ग्रामीण इलाकों में शिक्षा का स्तर किस कदर गिर गया है इसका अंदाज़ा भी नही लगाया जा सकता। ज्यादातर स्कूल खास कर प्राथमिक स्कूलों की हालत बेहत ही खराब है। जहॉ पहले से बच्चे ज्यादा ओर शिक्षक कम है। बमुश्किल बच्चे स्कूल तक पहुँच रहे हैं लेकिन उनको पढ़ाने वाले शिक्षक ही अगर नदारत हो तो स्कूल के बच्चों के भविष्य का क्या होगा इसका अंदाज़ा स्वतः ही लगाया जा सकता है। बामनिया के काजलिया फलिए में स्थित प्राथमिक स्कूल में लगभग 40 बच्चे अध्ययनरत है। जिनको पढ़ाने के लिए दो शिक्षको की व्यवस्था की गई है। इसमें एक रतलाम से अपडाउन करता है तो दूसरा अतिथि शिक्षक है, लेकिन दोनों ही समय पर नही आते तो कभी-कभी गायब ही रहते है।

क्षेत्र के एक सजक ग्रामीण ने स्कूल के ग़ायब शिक्षको की पोस्ट सोशल मीडिया पर डाली। मामले को संज्ञान में लिया गया तो पोस्टकर्ता ने स्कूल का वीडियो बना कर भेजा जिसमे केवल बच्चे ही नजर आ रहे हैं। ग्रामीण द्वारा की गई पोस्ट की माने तो स्कूल से दोनों शिक्षक ज्यादातर समय गायब रहते हैं और स्कूल की छुट्टी भी खाना बनाने वाली बाई को करना पड़ती है। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था से देश के भविष्य को चमकाने का दावा प्रदेश की भाजपा सरकार कर रही है।

मेघनगर में भाजपा की होगी नगर सरकार

भाजपा के आठ, एक निर्दलीय व 6 कांग्रेस प्रत्याशी पार्षद बने

माही की गूंज, मेघनगर। निसार पठान

ग्राम सरकार के बाद अब नगर सरकार के भी परिणाम घोषित हो गए। बहुप्रतिक्षारत मेघनगर नगर परिषद की द्वितीय पारी हेतु 15 वार्डो में 64 प्रत्याशियों ने अपना भाग्य आजमाया था। मुख्य मुकाबला कांग्रेस व भाजपा के मध्य ही रहा। किंतू कुछ वार्डों में त्रिकोणी से लेकर छःकोणी मुकाबला भी देखा गया। हालांकि भाजपा-कांग्रेस दोनों ही दलों को अपने निकटतम प्रतिद्वंदियों, खुद के बागीयों व निर्दलियों से संघर्ष करना पड़ा। इस बार मेघनगर के नतीजे चौकाने वाले रहे व भाजपा का कमल आठ वार्डों में खिला। कांग्रेस के पंजे को 6 वार्डों में ही सिमट कर रहना पड़ा। एक वार्ड क्रमांक 6 पिछले चुनाव की भांती इस बार भी निर्दलीय के पाले में गया। इस बार अध्यक्ष के चुनाव सीधे नहीं होते हुए पार्षदों द्वारा तय होना है। अतः मेघनगर में 8 पार्षदों के सहारे भाजपा की ही स्पष्ट नगरपरिषद बनना तय है। अध्यक्ष व उपाध्यक्ष भी उसी के होंगे। चुनाव परिणाम में काफी आश्चर्य मिश्रित स्थिति देखने को मिली। वार्ड क्रमांक 1 से भाजपा की दिग्गज ज्योति नटवर बामनिया को कांग्रेस की शायदा भाबर के हाथों हार का सामना करना पड़ा। शायदा को 203 मत तो ज्योति को 152 वोट मिले। ज्योति नटवर बामनिया पूर्व सरपंच व पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष भी रह चुकी है। किंतू इस बार दिल्ली व भोपाल में भाजपा की सरकार होने के बावजूद पार्षद तक का चुनाव नहीं जीत पाई। राजनीतिक विश्लेषकों का कहन है कि ज्योति को पार्टी ने खुद के वार्ड से अलग दूसरे वार्ड से चुनाव में उतारा था। जिससे उक्त स्थिति बनी। एक ओर 1999 से पंच से लेकर नगर परिषद तक बामनिया परिवार का कब्जा था, जो अब नही देखने को मिलेगा। वहीं वार्ड क्रमांक 6 युवा महबूब उर्फ मुन्ना इनाल अपनी पारीवारिक राजनीतिक विरासत को बचाने में इस बार भी सफल रहे। यह 1999 से पंच व विगत चुनाव इनकी पत्नी पार्षद रही थी। महबूब इनाल पूर्व में भी निर्दलीय चुनाव जीतते आ रहे है। इस बार भी निर्दलीय थे। इन्हे 304 वोट मिले। निकटतम प्रतिद्वंदी इमरान उर्फ अब्दुल्ला को 143 वोट मिले। अब्दुल्ला भी उक्त वार्ड में निर्दलीय था। भाजपा के पंकज बड़ौला को 26 तो कांग्रेस के विधायक भूरिया के मीडिया प्रतिनिधि अलीअसगर बोहरा को 22 मत मिले।

दबदबा कायम

कांग्रेस के दबंग स्थानीय नेताओं में शुमार महबूब सुलेमान गड़ूली वार्ड क्रमांक 7 से चुनाव जीत गए। महबूब को 261 वोट मिले। गौरतलब बात यह है कि यहां निर्दलीय प्रत्याशी सौहेल सलीम शैरानी ने काफी टक्कर दी सोलेह को 215 वोट मिले। भाजपा के राजेश अहिर को 40 मत मिले। उक्त वार्ड में तीन अन्य उम्मीदवार भी थे। ज्ञातव्य है कि महबूब गड़ूली लंबे समय से स्थानीय निकाय की राजनीति में सक्रिय है। पूर्व में इनकी पत्नी आसमा महबूब उपाध्यक्ष भी रही। दो दशक पूर्व महबूब के पिता सुलेमान शेख ने स्थानीय ग्राम पंचायत में दिग्गज स्वर्गीय रमेश ललवानी को सिकस्त दी थी व सरपंच बने थे। लंबे समय तक सुलेमान सरपंच व उपसरपंच पद पर काबिज रहे। इस तरह गड़ूली परिवार स्थानीय निकाय में चार दशकों से काबिज है।

वार्ड क्रमांक 12 से कांग्रेस के दिग्गज व विधायक प्रतिनिधि अनुप भंडारी की पत्नी समता भंडारी 9 वोटों से विजय रही। मेघनगर नगर परिषद का सुशिक्षित उक्त वार्ड सबसे छोटा वार्ड है। इस बार यहां 224 मतदाताओं ने मत का प्रयोग किया था जिसमें से कांग्रेस को 83 मत मिले व निर्दलीय ललिता ब्रजवासी को 74 मत मिले, भाजपा यहां तीसरे स्थान पर रही। उसके उम्मीदवार को 67 मत मिले। पूर्व परिषद में इसी वार्ड से अनुप भंडारी पार्षद रहे थे। ज्ञातव्य हो कि तीन दशक पूर्व अनुप के परिवार के इनके काका तखतमल भंडारी भी मेघनगर के सरपंच तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुनसिंह के कार्यकाल के समय रहे थे।

वार्ड क्रमांक 3 से सर्वाधिक मतों से विजयी हुए भाजपा के लाखन सिंह देवाणा ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के अरूण ओहारी को सिकस्त दी। लाखन को 342 व अरूण को 144 मत मिले। उक्त वार्ड में पूर्व जनपद सदस्य व पूर्व प्राचार्य प्रेमलता मारू को भी हार का सामना करना पड़ा निर्दलीय विश्वराज जोशी को 65 मत मिले।

वार्ड क्रमांक 10 पर भाजपा के युवा कद्दावर नेता संघीय निष्ठा से जुड़े करमठ कार्यकर्ता भूपेष भानपुरिया की पत्नी मेघा भानपुरिया विजयी रही। मेघा को 382 व निकटतम प्रतिद्वंदी निर्मला सैतानसिंह को 253 वोट मिले। पूर्व परिषद में भूपेष उक्त वार्ड से मेम्बर थे।

वार्ड क्रमांक 15 से कांग्रेस की जोगी वसुनिया अपनी सीट बचाने में सफल रही। इन्होने 261 मत प्राप्त किए। उक्त वार्ड पर भाजपा के राजू डामोर को 95 मत मिले। निर्दलीय अन्य प्रत्याशी को 174 व 46 मत मिले।

सर्वाधिक शिक्षित उम्मीदवार राखी जैन पहला चुनाव जीती

वार्ड क्रमांक 11 में भाजपा की राखी राकेश जैन को 216 मत मिले। उन्होने अपने प्रतिद्वंदी कांग्रेस की मीना जैन को पराजित किया। मीना को 78 मत मिले। उक्त वार्ड में त्रिकोणीय मुकाबला था। राखी संपूर्ण नगर परिषद के जीते प्रत्याशियों में सर्वाधिक शिक्षित (एम कॉम) है व पहली बार ही चुनाव लड़ा व भाजपा के सहारे अपनी राजनीतिक सफर अब तय करेगी।

कमलेश की वल्ले -वल्ले

वार्ड क्रमांक 2 में भाजपा के दिग्गज युवा उम्मीदवार पूर्व में मदरानी मंडल की जिम्मेदारी का निर्वहन करने वाले व जिला पंचायत सदस्य रहे कमलेश मचार 277 मत प्राप्त कर विजयी रहे। कमलेश ने कलसिंह को पराजित किया। कलसिंह को 108 मत मिले। संभावित नगर परिषद अध्यक्ष के लिए कमलेश मचार का नाम चर्चाओं में है। कमलेश को उद्योगपति व समाजसेवी ब्रजेश चुन्नु शर्मा का पुरजोर सहयोगी माना जाता है। कमलेश को विजयी आशिर्वाद देने कुछ समय के लिए चुन्नु भैया भी विजय जुलूस में देखे गए।

काका की विरासत भतीजे के सहारे

वार्ड क्रमांक 9 में भाजपा की स्मीता हितेश पडियार 225 मत प्राप्त कर वार्ड पार्षद चुनी गई। यहां पर करीब 5 निर्दलीय भी मैदान में थे। निर्दलीय दक्षा देवाणा को 95 मत मिले। कांग्रेस के प्रत्याशी को 36 मत ही प्राप्त हुए। ज्ञातव्य है कि भाजपा से जुड़े हितेश पडियार समाजसेवी, मद्रुभाषी व संगठन क्षमता में भी अग्रणी माने जाते है। पूर्व में उक्त वार्ड में लंबे समय तक हितेश के काका आनंदीलाल पडियार कांग्रेस के सहारे पंच से लेकर पार्षद तक रहे है। वार्ड वासी कह रहे है कि काका नहीं तो भतीजे ही सही भले कांग्रेस नहीं तो भाजपा ही सही। अब विकास की उम्मीद हितेश भाई के माध्यम से वार्डवासी लगाए हुए है।

राजगढ़ नाका मित्र मंडल निकला किंग मैकर

वार्ड क्रमांक 5 पर कसमकस की स्थिति थी। मतदाता से लेकर स्थानीय चौराहे व चौपालों पर सब अलग-अलग कयासें लगा रहे थे कि अचानक उक्त वार्ड पर राजगढ़ नाका मित्र मंडल के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने मोर्चा संभाला व पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष शैलेष दुबे सतत मानिटरिंग करते रहे। व एन मौके पर बाजी पलट गई। यहां सेवाभावी, शिक्षित, मिलनसार संतोष परमार 219 वोट प्राप्त कर 51 वोट से निर्दलीय प्रत्याशी दबंग, युवा नेता, समाजसेवी छवि के इकबाल इनाल पर भारी रहे। यहां कांग्रेस 4 स्थान पर रही। निर्दलीय धार्मिक प्रवत्ती के समाजसेवी अशोक बंधु को 112 वोट मिले। कांग्रेस के मोनू अमित ललवानी को 60 वोट पर ही सिमटना पड़ा। परिणाम आते ही संतोष के विजयी जुलूस में आशिर्वाद देने शैलेष दुबे मय मित्र मंडली के पहुंचे व संपूर्ण वार्ड में घूमकर वार्डवासियों का आभार माना। ज्ञातव्य है कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उक्त वार्ड काफी लंबा है।

शांतिपूर्ण मतदान प्रक्रिया पर प्रशासन ने जताया आभार

उत्कृष्ट विद्यालय मैदान पर विजयी प्रत्याशियों को निर्वाचित प्रमाण-पत्र चुनाव अधिकारी एसडीएम अंकिता प्रजापति व सहायक अधिकारी तहसीलदार रविन्द्रसिंह चौहान ने वितरित किए। जिलाधीश सोमेश मिश्रा, अपर कलेक्टर मुजाल्दा, एडीशनल एसपी श्री ध्रुवे, एसडीओपी श्री राठी, मास्टर ट्रेनर मनीष पालीवाल, बीईओ जीएस देवहरे आदि उपस्थित थे। प्रशासन ने शांतिपूर्ण मतदान प्रक्रिया संपन्न होने पर नगरवासियों का आभार जताया। ज्ञातव्य है कि मध्यप्रदेश के नगर परिषद क्षेत्रों में मेघनगर में 81.2 प्रतिशत मतदान हुआ था। जो कि मध्यप्रदेश के टाप 5 में है। जिलाधीश श्री मिश्रा ने उत्कृष्ट विद्यालय परिसर में पौधा रोपण भी किया। विजयी महिला उम्मीदवार शायदा भाबर, श्रीमती वसुनिया व समता भंडारी से भी प्रशासन ने पौधारोपण करवाया व पर्यावरण जागरूकता का संदेश दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422